तिरुमल तिरुपति देवस्थान

# सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

अक्तूबर-2025

रु.20/-

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 05
October - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

## तिरुमल में पुष्पयाग महोत्सव

30-10-2025

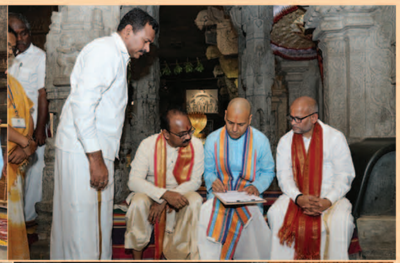

## नूतन कार्यनिर्वहणाधिकारी (गौरव संपादक) जी को हार्दिक स्वागत!

श्री अनिल कुमार सिंघाल, आई.ए.एस., ने दि.10-09-2025 को दूसरी बार ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी का पदभार ग्रहण किया। इससे पहले तिरुमल मंदिर के 'रंगनायक मंडप' में श्री अनिल कुमार सिंघाल ने परंपरानुसार, वर्तमान बिदाई हुए ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., से ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी पद के कार्यभार को ग्रहण किया। बाद में श्री वेंकटेश्वर स्वामी के समक्ष नए ई.ओ. ने ति.ति.दे. का न्यास-मंडली के पदेन सदस्य सचिव के रूप में भी शपथ ली। श्री बालाजी का दर्शन के बाद उन्हें वेदाशीर्वचन को प्राप्त लिया। और साथ-साथ तीर्थ-प्रसाद व चित्रपठ को भी सौंपा दिया गया। ति.ति.दे. के ई.ओ. के रूप में अपने पिछले कार्यकाल में लग-भग मई-2017 से अक्तूबर-2020 तक कार्य किया। इन्होंने कई विकास कार्यों का निर्माण और संचालन किया। एस.एस.डी. टोकन शुरू किया और ति.ति.दे. के स्थानीय मंदिरों में कई बदलाव और विकास कार्य किए। श्री अनिल कुमार सिंघाल, आई.ए.एस., सप्तगिरि पत्रिका के 'गौरव संपादक' भी हैं। 'सप्तगिरि' उनका हार्दिक स्वागत करता है और उनकी सभी पहलों में सफलता की कामना करता है। इस संदर्भ में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष व सदस्यगण के साथ अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया।

## बिदाई समारोह

श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., जिन्होंने जून-2024 से सितंबर-2025 तक ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी के रूप में कार्य किया। दि.09-09-2025 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के कांफ्रेंस हॉल में आयोजित बिदाई समारोह में सम्मानित किया गया। अपने कार्यकाल में उन्होंने लड्डूओं का स्वाद बढ़ाने, अन्नप्रसाद का रुचि व स्वच्छता के लिए विशेष कृषि किया। फीड-बैक प्रणाली, घन व्यर्थ पदार्थों का निर्वहन, स्वागत विभागों के साथ तिरुमल में लड्डू काउंटरों में कियोस्को (KIOSK) मिशनों को लगाने सहित कई अन्य प्रणालियों को सुव्यवस्थित किया। वर्तमान में सामान्य प्रशासनिक विभाग में प्रधान सचिव (राजनीतिक) के पद पर कार्यरत बदल गई हैं। इस संदर्भ में ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ., जे.ई.ओ., सी.वी. & एस.ओ., एफ.ए. & सी.ए.ओ. के साथ अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया।

**स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।**
**धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।।**

*(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३१)*

**हे अर्जुन! अपने धर्म को देखकर भी तू भय करने योग्य नहीं है यानी तुझे भय नहीं करना चाहिये; क्योंकि क्षत्रिय के लिये धर्मयुक्त युद्ध से बढ़कर दूसरा कोई कल्याणकारी कर्तव्य नहीं है।**

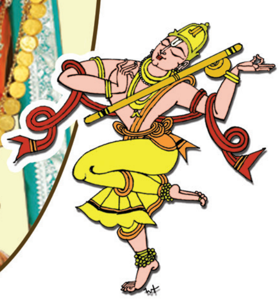

देहि नित्युडु देहमुलनित्यालु
हल ना मनसा इदि मरुवकुमी ।।देहि।।

गुदि पात चीरमानि कोत्तचीर गट्टिनट्टु
मुदि मेनु मानि देहि मोगि कोत्तमेनु मोचु
अदन जंपग लेवु आयुधमु लीतनि
गदिपि अग्नियु नीरु गालि चंपगलेवु ।।देहि।।

ईतडु नरकुवडडीतडग्निगालडु
ईतडु नीटमुनगडीतडु गालिबोडु
चेतनुडे सर्वगतुडौ चलियिंचडेमिटनु
ईतल ननादि ईतडिरवु गदलडु ।।देहि।।

चेरि कानरानिवाडु चिंतिंच रानिवाडु
भारपु विकाराल बासिनवाडी आत्म
अरय श्री वेंकटेशु नाधीन मीतडनि
सारमु तेलियुटये सत्यमु ज्ञानमु ।।देहि।।

आत्मा के शाश्वता तत्त्व को सहारते हुए उसके श्री वेंकटेश को सदा अधीन में रहने का विवरण दिया गया है। जिस तरह कपडों को बदला जाता है, उसी तरह आत्मा भी देहों को बदलती रहती है। आत्मा को आयुध, अग्नि, पानी तथा हवा आदि मार नहीं सकते हैं। जीवात्मा के चेतनत्व, सर्वगमनत्व, अनादित्व का उपनिषदों में कथित रूप में ही अन्नमाचार्य वर्णन कर रहे हैं। गीता के 'वासांसि जीर्णानि' 'नानुशोचितुमर्हसि' आदि श्लोकों के तात्पर्य का अनुसरण कर, गीता पर अपने अटल विश्वास को वे प्रकट करते हैं। आत्मा (देहि) शाश्वत है। देह अशाश्वत है। हे मन! इसे सदैव याद रखना। पुराने फटे वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को पहनने की तरह आत्मा भी नये देहों का धारण करती है। किसी तरह के आयुध अग्नि, नीर, पवन आदि इसे मार नहीं सकते हैं। आत्मा सदा सर्वदा चेतनता से भरी रहती है। वह सर्वगतिमान तथा अनादि है। वह अव्यक्त, अचिंत्य तथा विकार रहित है। वह सदा श्री वेंकटेश्वर के अधीन में रहती है। इस सत्य का सार ग्रहण करना ही ज्ञान है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

# ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

## मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

## भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

### सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

# सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-56 अक्तूबर-2025 अंक-05


## विषयसूची


| | | |
|---|---|---|
| भगवान वेंकटेश्वर के उत्सव - ब्रह्मोत्सव | श्री देवपूजला राजकुमार | 07 |
| श्री वेंकटाचल की महिमा | आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी | 12 |
| चक्रस्नान | डॉ.बी.के.माधवी | 16 |
| विजयदशमी के दिन शमीवृक्ष की आराधना | डॉ.पी.बालाजी | 19 |
| तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी) | प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा | 22 |
| श्री रामानुज नूट्न्दादि | श्री श्रीराम मालपाणी | 26 |
| प्रकाशों का त्योहार दीपावली | श्री वेमुनूरि राजमौलि | 31 |
| नव नंदियों का महिमान्वित क्षेत्र नंद्याल | डॉ.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी | 34 |
| रहस्य शिव के स्वरूप का | डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी | 39 |
| नागुल चविति | डॉ.एच.एन.गौरीराव | 41 |
| तुलसी माहात्म्यम | डॉ.जी.सुजाता | 45 |
| अक्तूबर महीने का राशिफल | डॉ.केशव मिश्र | 47 |
| नीतिकथा - कौन है बड़ा? | श्री के.रामनाथन | 48 |
| चित्रकथा - गुरु का सम्मान करें | डॉ.एम.रजनी | 50 |
| क्विज - 39 | | 52 |


website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री मनवालमहामुनि (चित्रकार - श्री एम.ई.रुद्रमूर्ति)।


*गौरव संपादक*
श्री अनिल कुमार सिंघाल, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

*प्रकाशक - संपादक,*
*प्रधान संपादक* (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC

*उपसंपादक*
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

*मुद्रक*
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

*स्थिरचित्र*
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।



एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00



अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.


**सूचना**
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

# दीपावली आस्थान महोत्सव

*"दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः।*
*दीपो हरतु मे पापं संध्या दीप नमोऽस्तुते।।"*

दीपक प्रकाश की रोशनी के साथ अंधेरे को हटा देता है। यह समस्त सृष्टि त्रिमूर्त्यात्मक है। माने ब्रह्म सृष्टि को सृजन करते है। विष्णु स्थिति कारक है। भगवान ईश्वर लयकारक है। जनार्धन स्थिति कारक है। इसलिए दीपज्योति को जनार्धन कहा जाता है। जीवि का जीवन के लिए आनंद और शुभों को प्रसादित कर, रोशनी को देनेवाला भगवान जनार्धन है। केवल अंधकार को दूर करना मात्र ही नही, जनों का पाप राशि को भी दूर करनेवाले ज्योतिस्वरूप नारायण भगवानजी को प्रथम नमस्कार है। सूर्य भगवान सदा अपनी रोशनी को प्रकाशित करनेवाले प्रत्यक्ष दैव है। वे नित्य चैतन्य मूर्ति है।

तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में अनुनित्य दीपोत्सव को संपन्न करते हैं। दीप से प्रज्वलित रोशनी - अंधकार, अज्ञान व बुराईयों को दूर करते हैं। इसीलिए दीप कांति समृद्धि को प्रसादित करता है। अनुनित्य तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर के बाहर संपन्न करनेवाले सहस्रदीपालंकार सेवा को देखने वाले भक्तजन अपना पाप राशि को हटा कर सकते है। मंदिर के बाहर में ही नहीं ऐना महाल (दर्पण का हॉल) मंडप में भी इस सहस्रदीपालंकरण सेवा को संपन्न करते है। बाहर संपन्न करनेवाले सेवा को सभी भक्तगण दिखा सकता है। ऐना महाल (दर्पण का हॉल) में संपन्न करनेवाले सहस्रदीपालंकरण सेवा एक आर्जित सेवा है। इसलिए कुछ लोगों को मात्र ही इस सेवा में भाग लेने का अनुमति मिलता है। सेवा टिकट उपलब्ध भक्तलोग मात्र ही इस सेवा में भाग लेते है। जो लोग मात्र ही यह सेवा देख सकते हैं। यह सेवा अनुनित्य सायंकाल प्रदोष के समय में आयोजित करते है। संध्या समय में प्रज्वलित दीपों को देखते ही- "दीपं सर्व तमोपहं दीपेना साध्यते सर्वं संध्या दीपं नमोस्तुते!" कहते हुए भक्तगण इस सहस्रदीपालंकरण सेवा को दर्शन कर सकते हैं।

वैसे ही हर साल तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में 'दीपावली आस्थान' को आयोजित करते है। यह आस्थान को दीपावली त्योहार के दिन माने आश्वीयुज बहुल अमावास्या के दिन संपन्न करते है। हर साल स्वामीजी को इस दिन तोमाल, अर्चना, कल्याणोत्सव सेवा संपन्न होने के बाद बाकी आर्जित सेवाओं को बंध करते है। पहला घंटा समय का सेवा होने के बाद ही श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामीजी सर्वभूपाल वाहन पर आरूढ़ होकर स्वर्ण देहली (बंगारु वाकिली) के सामने हुए घंटामंडप में गरुड़ाल्वार के अभिमुख रूप में आसीन हो जाते हैं। और एक आसन पर दक्षिणाभिमुख रूप में विष्वक्सेन जी ने आसीन होते है। अर्चकगण विशेषपूजाएँ, आरती, निवेदन आदि को समर्पित करते है। भगवानजी को नूतन रेशमी वस्त्र समर्पित, अक्षतारोपण कार्यक्रम संपन्न करते हैं।

इस दीपावली आस्थान पूर्ति होने के बाद श्रीदेवी, भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामीजी ने चार माड़ावीथियों में जुलूस निकाल कर भक्तों को दर्शन देते हैं। सभी भक्तगण भगवानजी का दर्शन प्राप्त कर पुनीत बन जाते हैं।

# भगवान वेंकटेश्वर के उत्सव - ब्रह्मोत्सव

- श्री देवपूजला राजकुमार

शुभमुहूर्त के लिए नियत किए गए समय पर ध्वज फहराया जाता है जिसे ध्वजारोहण कहा जाता है। गरुड़जी को मुद्गन्नम् का नैवेद्य समर्पित किया जाता है। भक्तों का विश्वास है कि इस प्रसाद को जिसे स्थानीय भाषा में 'कोडि पोंगल' कहा जाता है, ग्रहण किया जाय तो संतान की आकांक्षा रखने वाली स्त्रियों की कामना पूर्ण होती है और अस्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ हो जाते हैं।

### नवकुंभारोपणम्

माना जाता है कि ब्रह्मांडीय ध्वज आरोहण के पश्चात् गरुड़जी को ब्रह्मोत्सव में सभी देवताओं को आमंत्रित करने भेजा जाता है। अब यागशाला में नवकुंभारोपणम् अनुष्ठान संपन्न किया जाता है। इस अनुष्ठान में वेदिका पर सोना, चाँदी, तांबा, मिट्टी से निर्मित नौ कुंभ पात्र रखे जाते है, इनमें प्रधान पात्र को मध्य में और आठ कुंभ पात्रों को चारों तरफ रखा जाता है। यागशाला में वैदिक यज्ञों की संपन्नता के पश्चात इन नौकुंभ पात्रों में महाविष्णु के नौ रूपों का आह्वान किया जाता है। प्रधान कुंभ में भगवान विष्णु यानी कि भगवान श्री वेंकटेश्वर का अपने दोनों पट्टमहिषियों के साथ आह्वान किया जाता है। इसी प्रकार पूर्व दिशा के कुंभ में पुरुष, दक्षिण दिशा के कुंभ में सत्य, पश्चिम दिशा के कुंभ में अच्युत, उत्तर दिशा के कुंभ में अनिरुध्द, दक्षिण पूर्व दिशा के कुंभ में कपिला, दक्षिण पश्चिम के कुंभ में यज्ञ, उत्तर पश्चिम दिशा के कुंभ में नारायण और उत्तर पूर्व दिशा के कुंभ में पुण्य का आह्वान किया जाता है। इस प्रकार आह्वान किए गए विष्णु के इन नौरूपों की नौ दिनों तक आठ या ग्यारह उपचारों से प्रतिदिन दो बार पूजा की जाती है और अंत में नैवेद्य अर्पित किया जाता है।

उत्सव देवता मूर्तियों और उनके देवियों को, चक्र को, अनंत को, गरुड़जी को, विष्वक्सेन को एवं कुंभ को कौतुक बंधनम् या ब्रह्मांडीय सूत्र धारण करवाया जाता है। इन नौ

दिनों में प्रतिदिन प्रातः एवं सायं यागशाला में यज्ञ संपन्न किए जाते हैं। होम के साथ साथ आलय के चहुं ओर चार माड़ावीथियों में विभिन्न रथों पर उत्सवमूर्तियों की वाहनसेवाएँ निकाली जाती है। भगवान वेंकटेश्वर की उत्सवमूर्ति भगवान मलयप्पस्वामी की विभिन्न वाहनों में शोभायात्रा निकाली जाती है, इनमें महाशेष वाहन में प्रथम दिवस के सायंकाल शोभायात्रा निकाली जाती है। द्वितीय दिवस - लघुशेषवाहन और हंस वाहन! तृतीय दिवस - सिंह वाहन और सर्वभूपाल वाहन! चतुर्थ दिवस - कल्पवृक्ष वाहन! और मोतीवितान वाहन! पंचम दिवस - मोहिनी अवतार और गरुड़ वाहन! षष्टम दिवस - हनुमंत वाहन और स्वर्णरथ वाहन! गजवाहन! सप्तम दिवस सूर्यप्रभा एवं चंद्रप्रभा वाहन! अष्टम दिवस रथोत्सव! एवं अश्ववाहन! नवम दिवस पालकी उत्सव! चक्रस्नान या अवभृथस्नान! तिरुच्चि और रात्रि को ध्वजावरोहणम!

जो भक्त शोभायात्रा में भगवान बालाजी के दर्शन करते हैं, उन्हें मंदिर में यज्ञ करने का पुण्य प्राप्त होता है। प्रतिदिन उत्सवमूर्तियों का स्नपन तिरुमंजनम संपन्न किया जाता है। तिरुमल पर्वत पर ब्रह्मोत्सवों के दूसरे, तीसरे, सातवें एवं नौवें दिवस स्नपन तिरुमंजनम संपन्न किया जाता है। इस प्रकार नौ दिवसीय ब्रह्मोत्सव में केवल चार दिन ही स्नपन तिरुमंजनम् संपन्न किया जाता है। ब्रह्मोत्सवों के समय शोभायात्राओं के संपन्न होने पर उत्सवमूर्तियों का आस्थानम् किया जाता है। इस आस्थानम् के अंतर्गत राजागोपचारम् जिनमें दर्पणम्, चामरम्, छत्रम्, व्याजनम्, तुरंगाकम्, नृत्यम्, गीतम्, वैष्णव मंत्र, वेद स्तोत्रम्, धूपम्, दीपम्, निवेदनम्, नीराजनम्, प्रणामम् अर्पित किये जाते हैं। छटवें दिवस की शाम को वसंतोत्सवम् या गंधोत्सवम मनाया जाता है। वैदिक मंत्रोच्चारण एवं उपचारम् संपन्न होने के उपरांत उत्सवमूर्तियों पर गंधम् छिड़का जाता है उसके पश्चात मूर्तियों को आलय के चारों ओर चारों माड़ावीथियों में स्वर्णरथ शोभायात्रा में घुमाया जाता है जिसे स्वर्ण रथोत्सव कहा जाता है।

आठवें दिन, प्रातः महा रथोत्सवम् (लकड़ी का रथ) उत्सव मनाया जाता है। दैनिक पूजा के उपरांत रथ का शुध्दीकरण किया जाता है और उत्सवमूर्तियों को उसके अंदर रखा जाता है, नियत शुभमुहूर्त पर चारों माड़ावीथियों में रथ को खींचा जाता है। भक्तों का विश्वास है कि जो भक्त रथ पर आसीन भगवान विष्णु के दर्शन करते हैं उनका पुनर्जन्म नहीं होता ('रथोत्सवम द्रष्टवा पुनर्जन्म ना विद्यते')। नौवें दिवस की प्रातः मूर्तियों का चूर्णोत्सव संपन्न किया जाता है। मूर्तियों पर सुगंधित तेल छिड़का जाता है और चारों माड़ावीथियों में पालकी में शोभायात्रा निकाली जाती है। अब मंदिर से संबंधित पवित्र कुंड में अवभृथस्नान (अंतिम स्नान) संपन्न किया जाता है। तिरुमल में मलयप्पस्वामी को देवियों और सुदर्शन चक्र के साथ श्री वराह स्वामी मंदिर लाया जाता है और इन मूर्तियों का स्नपन तिरुमंजनम् संपन्न होने के पश्चात् दैवीय सुदर्शन चक्र को पवित्र स्वामिपुष्करिणी में तीन बार डुबोया जाता है।

सायंकाल ध्वजारोहणम् (ध्वज उतारा जाना) संपन्न किया जाता है। इसके पहले ध्वजारोहणम् की ही तरह चारों माड़ावीथियों में शोभायात्रा निकाली जाती है। प्रधानाचार्य आमंत्रित अष्टदिक्पालों को आठों दिशाओं में उनके स्थानों पर दैवीय विदाई देते हैं। आलय वापसी पर ध्वजस्तंभ पर स्थित गरुड़जी की यथाविधि पूजा वैदिक मंत्रों के उच्चारण द्वारा की जाती है और ध्वज को परंपरागत रूप से उतारा जाता है। ध्वज को उसके रस्सी के साथ भगवान के चरणों पर रखकर मूलविराट मूर्ति (ध्रुव बेरम) की विशेष आराधना की जाती हैं। इस पूजा विधान द्वारा नवकुंभों की ब्रह्मांडीय ऊर्जा मूलविराट मूर्ति (ध्रुव बेरम) में कूर्चा यानी कुश (बलि घास) द्वारा परिणत की जाती है।

ब्रह्मोत्सवों के शुभारंभ की तैयारियाँ ब्रह्मोत्सव के पहले आनेवाले मंगलवार को शुध्दि कार्यक्रम द्वारा होता है। गर्भगृह और अन्य मंदिरों को सफेद मिट्टी, कुमकुम, हल्दी, कपूर, चंदन और अन्य जड़ी बूटियों द्वारा शुद्ध किया जाता है, इस

अनुष्ठान को 'कोविल आल्वार तिरुमंजनम' कहा जाता है। ध्वजारोहणम् के एक दिन पूर्व भगवान के सर्व सेनाध्यक्ष एवं परिचारक वर्ग के प्रधान विष्वक्सेन को नैऋत्य दिशा में वसंतमंडप पर लाया जाता है जहाँ भूसूक्तम् आदि द्वारा थोड़ी सी मिट्टी हाथी पर लाया जाता है इसका उपयोग नवधान्यों के अंकुरण हेतु मिट्टी के पात्रों में 'अंकुरार्पण' के लिए किया जाता है। इस शोभायात्रा में विष्वक्सेनजी उत्सव की समस्त व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते हैं कि वे सुव्यवस्थित तो हैं। इस शोभायात्रा के पश्चात् तिरुमलरायमंडप में विष्वक्सेन महाराज की एक आस्थानम् द्वारा पूजा की जाती है। इस पूजा के पश्चात् विष्वक्सेन महाराज अंकुरार्पण मंडप जाते हैं, उनके साथ अनंत (शेष नाग), गरुड़जी एवं सुदर्शन चक्र भी आते हैं जहाँ वे ब्रह्मोत्सव की समाप्ति तक रहते हैं।

यही एक ऐसा अवसर है जिसमें उत्सवमूर्ति को अन्य रूप में अलंकृत किया जाता है। इस दिन श्री मलयप्पस्वामी को बैठी हुई मुद्रा में अलंकृत किया जाता है उनके दाहिने हाथ को वरद हस्त से अभय हस्त में परिवर्तित किया जाता है जिससे वे सबको आशीर्वाद देते हैं। मोहिनी अवतार में भगवान सबके हृदय को आकर्षित कर देते हैं। ब्रह्मोत्सव में पंचम दिवस की रात्रि वाहन सेवाओं में सर्वाधिक महान सेवा! गरुड़ वाहन सेवा की जाती है। इस दिन भगवान श्री मलयप्पस्वामी स्वर्ण गरुड़ वाहन पर अकेले ही आरूढ़ होकर शोभायात्रा में निकलते हैं उनकी देवियाँ उनके अगल-बगल नहीं होती हैं। इस गरुड़ वाहन सेवा की रात्रि को भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी अपने इस सर्वप्रिय वाहन गरुड़ पर अत्यधिक भव्य रूप में दर्शन देते हैं, वे इस वाहन सेवा के दौरान दुर्लभ आभूषण जैसे लक्ष्मी हार, मकर कंठी, सहस्रनाम हारम् इत्यादि धारण करते हैं जो कि मूलविराट मूर्ति के ही आभूषण होते हैं। इस सर्वाधिक पवित्र वाहन सेवा में आंध्रप्रदेश शासन के मुख्यमंत्री स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर भगवान श्री वेंकटेश्वर की सेवा में विशेष रेशमी वस्त्र सायंकाल गरुड़ वाहन सेवा में अर्पित करते हैं। इसी गरुड़ोत्सव के दिन श्रीविल्लीपुत्तूर तमिलनाडु से भेजे गए माता गोदादेवी को अर्पित कर उतारे हुए पुष्पमाला से भगवान को अलंकृत किया जाता है। विशेष नवीन छत्रों को चेन्नई के भक्तगण पादयात्रा द्वारा चेन्नई से तिरुमल लाते हैं और भगवान को अर्पित करते हैं। भक्तों में उत्साह एवं आनंद का संचार करने वाले इस गरुड़ वाहन सेवा के समय भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी के दर्शन अत्यंत आह्लादकारी होते हैं जिसका अनुभव केवल वहाँ उपस्थित होकर दर्शन करने पर ही होते हैं संपूर्ण तिरुमल में 'गोविंदा गोविंदा' का उद्घोष गूंजायमान होता रहता है और भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी बालाजी की कृपा दृष्टि होती रहती है, पूरा वातावरण दिव्य हो जाता है भक्तों के हृदय से निकलने वाली भक्ति तरंगों का प्रवाह दिव्यता का अनुभव करवाता रहता है।

षष्टम् दिवस की प्रातः भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सवमूर्ति श्री मलयप्पस्वामी हनुमंत वाहन पर आरूढ़ होकर शोभायात्रा में दर्शन देते हैं। यद्यपि सजावट सामान्य होती है लेकिन बड़ी ही प्रभावकारी होती है। उसी दिन दोपहर को श्री मलयप्पस्वामी अपनी उभय देवियों श्रीदेवी, भूदेवी माता के साथ द्वितीय प्राकार में रंगनायकमंडपम पहुँचते हैं। वहाँ भगवान मलयप्पस्वामी तरो ताजा होने के लिए अपनी उभय देवियों के साथ अभिषेकम की सेवा लेते हैं इसके पश्चात एक आस्थानम के बाद वे पुनः मंदिर वापस पहुँचते है। सायंकाल भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी अपनी उभय

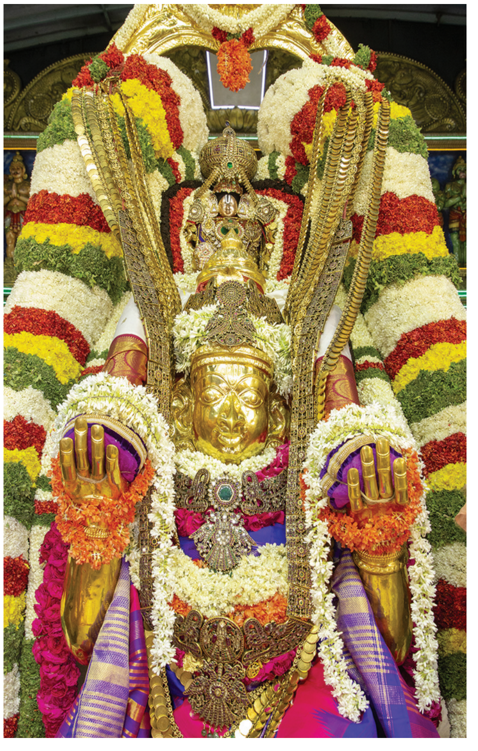

देवियों के साथ चारों माड़ावीथियों में बड़े ही भव्यता से अलंकृत स्वर्णरथ पर शोभायात्रा में निकलते हैं। सायंकालीन सूर्य किरणों से यह स्वर्णरथ जगमगा उठता है और आंखें चुंधिया जाने लगतीं हैं और भक्तों के हृदय वशीभूत हो जाते हैं।

इसी रात्रि को भगवान की गज वाहन शोभायात्रा निकलती है। सप्तम दिवस भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी की शोभायात्रा सूर्यप्रभा वाहन पर होती है, इस सूर्यप्रभा वाहन पर आरूढ़ होकर भगवान यह दर्शाते हैं कि वे सूर्य के केंद्र में विराजित रहते हैं। इस समय भगवान वज्र कवच एवं मणि किरीट से अलंकृत किए जाते हैं। सूर्य वृत्त के स्वर्णिम चाप पर भगवान का दर्शन अति मनमोहक होता है। इस शुभ अवसर पर भक्तों को भगवान की यह प्रार्थना याद आती है : 'नमः सवित्रे जगदेका चक्षुषे' इसका अर्थ है ''हे नारायण आपको प्रणाम है आप सूर्य के गोलाकार में निवास करते हैं जो कि विश्व की आंख है।''

इसी प्रकार भक्तगण, भगवान बालाजी को उसी रात यानी के सातवें दिन की रात चंद्रप्रभा वाहन पर आरूढ़ देखकर अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं। आठवें दिन की प्रातः रथोत्सवम् सेवा की जाती है। ब्रह्मोत्सव में इस रथोत्सव सेवा में अत्यधिक भक्तगण आकर्षित होते हैं। मलयप्पस्वामी एवं उनकी दोनों देवियों श्रीदेवी, भूदेवी को सुंदर पुष्पों की मालाओं, ध्वजों एवं तोरणों से सजी हुई सुसज्जित लकड़ी के रथ पर आसीन करवा कर शोभायात्रा निकाली जाती है।

इस लकड़ी के रथ को भक्तों द्वारा बड़े ही श्रद्धा पूर्वक मंदिर के चारों ओर खींचा जाता है। भगवान रथ पर शाम तक आसीन होकर अगणित भक्तों को अपने दर्शनों से कृतार्थ करते रहते हैं। इसी दिन रात्रि को भगवान अश्व वाहन पर आरूढ़ होकर दर्शन देते हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी का जन्म नक्षत्र श्रवणा नक्षत्र है, ब्रह्मोत्सव का अंतिम दिन इसी श्रवणा नक्षत्र के ही दिन होता है इस दिन उत्सवमूर्ति यानी के भगवान मलयप्पस्वामी अपनी दोनों देवियों के साथ चूर्णाभिषेकम के पश्चात मंदिर के चारों तरफ शोभायात्रा में आलय के सम्मुख सरोवर, स्वामिपुष्करिणी के पश्चिमी किनारे पर स्थित श्री वराह स्वामी मंदिर पहुँचते हैं। यहाँ भगवान श्री मलयप्पस्वामी माता श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ ताजगी हेतु अभिषेकम् सेवा स्वीकार करते हैं। इसके पश्चात भगवान के सुदर्शन चक्र को स्वामिपुष्करिणी के पवित्र जल में स्नान करवाया जाता है जिसे 'अवभृथस्नान' या 'चक्रस्नान' कहा जाता है जो कि ब्रह्मोत्सव के समापन का प्रतीक है। इसी समय भगवान वेंकटेश्वर बालाजी के भक्त भी सरोवर में डुबकी लगाते हैं इस डुबकी को अत्यंत पुण्यप्रद एवं पावन माना जाता है। भक्तगण इस स्नान तक उपवास करते हैं। इसके पश्चात उत्सवमूर्तियों को वापस मंदिर लाया जाता है। इस दिन के लिए मूलविराट मूर्ति के 'सर्वदर्शन' केवल अवभृथम और उत्सवमूर्तियों के मंदिर वापस आने पर ही प्रारंभ होता है। नवम् दिन की रात्रि को भगवान मलयप्पस्वामी, माता श्रीदेवी, भूदेवी के साथ मंदिर के चारों ओर तिरुच्चि में शोभायात्रा में निकलते है। यह शोभायात्रा, मंदिर के ध्वजस्तंभ तक वापस आती है।

प्रथम दिवस की भांति ही गरुड़ जी को पूजा और नैवेद्य अर्पित की किए जाते हैं उसके बाद भगवान की उपस्थिति में गरुड़ध्वज को उतारा जाता है। इस ध्वजारोहण सेवा के पश्चात ब्रह्मोत्सव का विधिवत समापन हो जाता है। इस ब्रह्मोत्सव के दौरान भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की उत्सवमूर्ति श्री मलयप्पस्वामी को अकेले ही शोभायात्रा में लघुशेष वाहन, हंस वाहन, सिंह वाहन, गरुड़ वाहन, हनुमंत वाहन, गज वाहन, सूर्यप्रभा वाहन, चंद्रप्रभा वाहन, अश्व वाहन और पल्लकी में मोहिनी अवतार के रूप में पूजित किया जाता है। उनकी दोनों देवियाँ माता श्रीदेवी एवं माता भूदेवी इन वाहनों में उनके बगल में नहीं रहती हैं। श्री मलयप्पस्वामी अपनी दोनों देवियों श्रीदेवी एवं भूदेवी के साथ चारों माड़ावीथियों में शोभायात्रा के समय महाशेषवाहन, मोतीवितान वाहन, कल्पवृक्ष वाहन, सर्वभूपाल वाहन, स्वर्णरथ, दारु रथ यानी लकड़ी का रथ और तिरुच्चि वाहन में ही साथ-साथ शोभायात्रा पर निकलते हैं।

भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी का ब्रह्मोत्सव वैखानस आगम पद्धति से संपन्न किया जाता है। धार्मिक अनुष्ठानों के अंतर्गत प्रतिदिन यागशाला में होम और हवन का निर्वहन किया जाता है। इन ब्रह्मोत्सव के समय भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी की शोभायात्राओं में छत्र, चामर, बैल, घोड़े, हाथी, मंगल वाद्य, भजन, वेदोच्चारण और दिव्य प्रबंध गायन द्वारा सेवा होती रहती है। मंदिर के बाहर ऊँजल मंडप में झूलन सेवा या ऊँजल सेवा द्वारा भगवान की सेवा की जाती है। प्रतिदिन मलयप्पस्वामी एवं दोनों देवियों माता श्रीदेवी, माता भूदेवी को शोभायात्राओं के पश्चात मंदिर में ले जाया जाता है और रंगनायकमंडप में विराजित करवाया जाता है, इसके पश्चात आस्थानम् संपन्न होती है जिसमें नैवेद्य और आरती द्वारा भगवान की आराधना की जाती है।

ब्रह्माजी द्वारा प्रारंभ किए गए विधि के अनुसार ही आज भी ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है। ब्रह्माजी ने दसवें दिन पुष्पयागम संपन्न किया था इसमें भगवान के पैर से लेकर सिर तक विभिन्न पुष्पों से अलंकार किया गया एवं वेद मंत्रों के उच्चारण के मध्य उनकी महिमा का गायन किया था। कालांतर में इसका प्रचलन

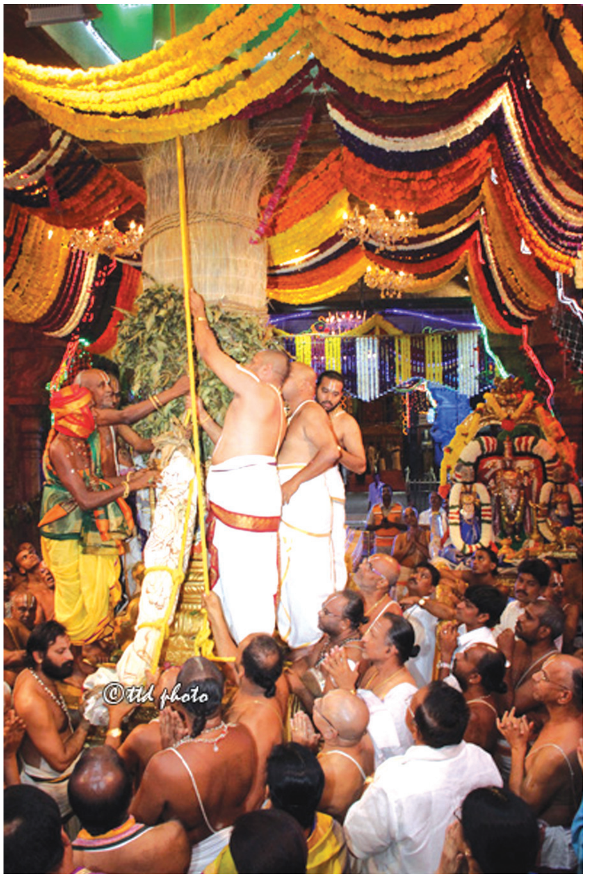


बंद हो गया था इस 1980 में फिर से प्रारंभ किया गया लेकिन इसके लिए कोई विशिष्ट दिन निर्धारित नहीं है।

तिरुमल में मनाए जाने वाला ब्रह्मोत्सव वास्तव में अपने आप में एक अलग एवं अत्यंत महिमामय उत्सव है। इस ब्रह्मोत्सवों का शुभारंभ समाज में शांति, संपन्नता, अच्छी वर्षा, अच्छा स्वास्थ्य लाने के उद्देश्य से एवं देश एवं देशवासियों को विकसित एवं शक्तिशाली बनाने के लिए किया जाता है। इन ब्रह्मोत्सवों में दर्शन करने के बाद भक्तगण जब तिरुमल से वापस जाते हैं तो वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान! आप अपने पर्वत के इस निवास स्थान 'आनंदनिलय' में ही संतुष्ट ना हो जाइए, मेरे हृदय के गुफा में भी अपना निवास बनाईए।

**ॐ नमो वेंकटेशाय!**

(गतांक से)

# श्री वेंकटाचल की महिमा

## (हिंदी गद्यानुवाद)

**पंचमाश्वास**

*तेलुगु मूल*
*मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा*

*हिंदी अनुवाद*
*आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी*

### तरिगोंडा नृहरि (संबोधन)

विश्वातीत! गुणाकर! विश्वोद्धार! विष्णुदेव वेदविहारा! विश्वेश्वर! सुरपूजित! शाश्वत! तरिगोंडा नृहरि! जनहितकारी!

### शौनकादि का प्रश्न

सूत को देखकर शौनकादि ने इस रूप में कहा। ''हे सूत! वकुला मालिका वेंकटाद्री से उतर जाने के बाद विष्णुदेव ने वेंकटाद्री पर रहते क्या प्रयत्न किया। उस के बारे में बताइए।'' यह सुन कर सूत ने इस रूप में कहा।

### सूत का समाधान

''सुनिए हे मुनिवर्य! हरि के द्वारा किए गए सारे आश्चर्यजनक कार्यों के बारे में आप को बता दूँगा। वे ऐसा है कि श्रीधर तब वेंकटाद्री पर रहते अपने मन में इस रूप में सोचने लगे थे।''

### हरि का भीलनी बन जाना

''वकुला मालिका को मैंने विवाह प्रयत्न करने के लिए भेजा है। उन के पास जाकर वकुला चतुराई से बात करेगी या नहीं? पुरुषों के बारे में स्त्री कैसे बता सकती है? लडकी वाले मेरे मूल के बारे में ठीक से नहीं जानते हैं। इसलिए अगर वे लडकी को देने में इनकार कर दे तो? बाद में उन के पास नहीं जा सकते। इसलिए पहले पहल ही ठीक से काम लेना चाहिए। ऐसा सोचते सर्वज्ञ होते हुए भी मनुष्य के रूप में चिंता करने लगे थे। बाद में शीघ्र ही उठकर पद्मावती को देखने की इच्छा से, मोह को वश में रखे बिना उन्होंने एक आश्चर्यजनक काम किया। सुनिए! वह यह है कि श्रीनिवास एक जीर्ण वस्त्र को पहन कर, ऊपर एक फटा पुराना कुरता पहन कर, झुकते और खडे होते एक भीलनी के वेश में पहाड से उतर कर अपनी कला को सब को दिखाने लगे। दांतों से बनी वस्तुएँ, घुंघुचियों की माला को गले में पहन कर, श्रीनिवास एक सात महीनेवाले बच्चे का सृजन करके, उसे बगल में बांध कर, हाथ में एक बेंत लेकर, नवधान्यों से भरी एक टोकरी को सर पर लादकर शीघ्र ही नारायणवनपुर पहुँच गए। वहाँ उत्साह से स्त्रियों को देखकर 'जानकारी!

(एरुका) हे जानकारी! दूंगी' ऊँची आवाज में पुकारने लगे। उस की पुकार को सुन कर नगर की स्त्रियाँ अपने भविष्य की जानकारी लेने के उत्साह से बुलाकर 'हे बुढिया! हमारे भविष्य के बारे में सच सच बताओ' कहते समय राजमहल की सखियों ने वहाँ पर आकर उस भीलनी को देखकर इस रूप में कहा। ''हे भीलनी! हमारी इच्छा और भविष्य के बारे में सच सच बताओगी तो तुम को हम रेशमी साडियाँ दे देंगी। अच्छी तरह भविष्य के बारे में बताओं।''

### भीलनी राजमहल की सखियों से बात करना

भीलनी ने इस रूप में कहा। ''मेरी भविष्यवाणी ही सारे जनों के लिए जीवन है, मेरी भविष्यवाणी सदा शुभकर, शाश्वत है। इस के अनुसार ही सारा संसार सुखी रहता है। मेरी भविष्यवाणी कैसी है? जानो ये पंचभूत के मूल, सकल जागृत सृष्टि, स्वप्नों के लिए आदि, अंत स्वयं बन कर, पूरे ब्रह्मांड में फैले हुए उसे जानो, आशा ज्योति को अपने आप में रखकर आनंद से चलानेवाले को जानो, ऐसी जानकारी और कोई दे नहीं सकता है। मेरी जानकारी सोलह आना सच निकलती है। भविष्यवाणी पर विश्वास रखनेवालों को मैं भविष्यवाणी बताऊँगी।'' भीलनी के इस रूप में कहने से सखियों ने धरणी देवी के पास जाकर इस रूप में कहा। ''हे माई! इस नगर में एक भीलनी आयी है। उसे यहाँ पर बुलाकर पुत्रिका के कष्ट को किस रूप में दूर किया जा सकता है। उपाय के बारे में पूछ सकते हैं। वह यह रहस्य को बता सकती है।'' सखियों के इस रूप में कहने से राज सति को भी यह अच्छा लगा। इसलिए 'उसे शीघ्र ही यहाँ ले आओ' कहते सखियों को भेजा। जाकर सखियों ने भीलनी को बुलाया। उन के बुलाने पर परमानंद से उसने स्वीकार करके 'रोनेवाले बच्चे को दूध देकर आऊँगी।' ऐसा कहा। और इस रूप में कहा। ''वहाँ आने के लिए बुलानेवालों से कहा मेरा बच्चा अब रो रहा है। इसे ठीक करके आऊँगी। इस रूप में भविष्यवाणी बताने से वह मुझे दूर रखेगा तो मेरा पेट कैसे भरेगा।'' कहते, हँसते, कराहते फिर इस रूप में कहा। ''वे भाग्यवान हैं, मैं गरीब हूँ। इसलिए मैं वहाँ कैसे आ सकती हूँ? इससे बढकर दांतहीन मुँह, पके बाल, मोटा पेट, बडे बडे कान, कूबड पीट, घुंघुची की मालाएँ, दांतों की वस्तुएँ, मेरे इस रूप को देखकर सोने के आभरण पहननेवाले सारे लोग नहीं हँसेंगे? इसलिए मुझे लज्जा होगी। आप के राजमहल को आने के लिए मुझ से क्या काम है? मेरी तरह गरीबों को ही भविष्यवाणी बता कर मैं इस पृथ्वी पर मैं पेट पाल रही हूँ।'' यह सुन कर सखियों ने कहा। ''हमारी माई को अगर तुम अच्छी तरह भविष्यवाणी बताओगी तो रत्न, भूषणादि वे देंगी। सोने की टोकरी देकर भेजेगी। इस के लिए हम ही साक्षी है।''

### भीलनी के द्वारा (हरि) धरणी देवी को भविष्य बताना

सखियों ने इस रूप में बडी आत्मीयता से भीलनी को बताकर उसे राजी करके उसे लेकर अंतःपुर पहुँची। वह धरणी देवी ने भीलनी को बडे स्नेह से सोने के पाटे पर बिठाया। तब भीलनी ने बडे आनंद से धरणी देवी की ओर देखकर कहा। ''हे वनिता! तुम बहुत बडा भाग्यवान हो, मैं अत्यंत गरीबिन हूँ। इसलिए मुझे और मेरे बच्चे को दूध-अन्न खिलाकर, अच्छे उपहार देने से मैं अच्छी तरह भष्यिवाणी बताऊँगी।'' तब धरणी देवी ने

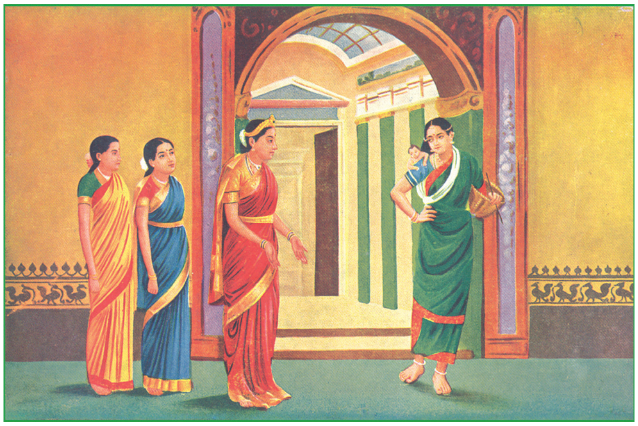

सखियों के द्वारा भीलनी को क्षीरान्न खिलाया। तब भीलनी और उस के बच्चे ने क्षीरान्न खाया। खाने से उठकर फिर भीलनी ने उपहार देने की बात कही। तब धरणी देवी ने उस भीलनी को उपहार दिला कर कहा। "हे भीलनी! तुम्हारा देश कौन सा है? यहाँ कहाँ रहती हो? तुम्हारे गाँव का नाम क्या है? हमारे गाँव में क्यों आयी हो?" पूछने पर हँसते हुए भीलनी ने कहा। "हे रानी! हम जैसे लोगों को इस धरती पर घर गृहस्थी कहाँ होती है? यहाँ तहाँ झोंपडी डाल कर कुछ दिनों के लिए रह कर फिर वहाँ से जानेवाले हैं। हमारे लिए देश क्यों चाहिए? हे रानी! आप के गाँव की स्त्रियों को भविष्यवाणी बताने यहाँ आयी हूँ। सारे भीलनी जाति के लोगों को सच ही एक ही जगह है। वह कहाँ पर है? पूछने पर वह चार-छेह, दस-बारह, पांच-छेह और दो शृंग पंक्तियों से आकाश को छूनेवाला होगा। छे पहाडों के ऊपर एक और पहाड जहाँ अनेक झरने प्रवाहित होते हैं। वह पहाड। चार रास्तों के बीच में रहनेवाला पहाड, सांप अपने आप में रखनेवाला पहाड, पहले हमारे बुजुर्गों के रहनेवाला बडा पहाड। उस पहाड पर सच ही हम रहते हैं। वहाँ से यहाँ पर आकर लोगों को भविष्यवाणी सुनाकर अपना पेट पालती हैं। अब तुम हम से भविष्यवाणी पूछो। बताऊँगी। पहले कुल्हाड भर मोतियाँ दिलाओ।" भीलनी के इस रूप में कहते धरणी देवी ने कुल्हाड भर मोतियाँ मंगाकर वहाँ रखवाया।

सोने के सूप में मोतियों को देखकर तब भीलनी ने हाथ बढाकर मोतियों को गूंथकर तीन ढेर बना कर बीच वाले ढेर पर मन लगाया। तब तीन बार सर उठाकर नमस्कार करके मन में ही गंगादि पुण्य तीर्थों को, काशी, गया, प्रयाग आदि प्रमुख पुण्य क्षेत्रों को, हरि हरादि देवताओं को, पराशक्ति आदि प्रमुख शक्तियों को प्रणाम करके, उन्हें आह्वान करके आगे भीलनी ने इस रूप में कहा। "सुनिए हे धरणी सति! देवतागण यहाँ आकर स्थापित हुए हैं। अब तुम दक्षिणा और तांबूल दिलाओ। हे तरुणी! और इस भविष्यवाणी टोकरी को नमस्कार करो।" कहने पर धरणी देवी ने तांबूल देकर, भविष्यवाणी टोकरी को नमस्कार करके भीलनी से इस रूप में कहा। "हे री! अपने मन में जो कामना है उस के बारे में सच सच बताओ। तुम्हारे बेटे को नूपुर दिलाऊंगी। तुम को दिव्य वस्त्र दूंगी। झूठ मत कहो हे भीलनी!" इस रूप में कहने पर धरणी देवी की ओर देखकर भीलनी ने कहा। "हे बेटा! मन में संदेह मत करो। अब तुम्हारे मन की बात बताऊँगी।"

### भीलनी के वाक्य

कह कर, अपने सामने धरणी देवी को सोने के पाटे पर बिठाकर अपने हाथ की बेंत को उसे देकर "हे विघ्नेश्वर! वीर भद्रा! मलयाल भगवती! मधुर मीनाक्षी! आम्रयाक्षी! कामाक्षी! कनकदुर्गा! चौडांबिका! ज्ञानांबा! कोल्हापुर लक्ष्मी! आप सब आकर मुझे दीजिए! मुझे दीजिए!" ऐसी प्रार्थना करके और इस रूप में कहा। "हे सति! दूसरे की तरफ न देखकर मेरी ही तरफ देखो। देव की कसम! सच बताऊँगी।" तुझ पर रीझ कर बताऊँगी कहते उसने और इस रूप में कहा। "हे माई! हे माई! तुम ने जिस के बारे में सोचा है वह बहुत ही गहरा है। देव ऐसा बोल रहा है। तुम ने जो सोचा है वह यह है। बताऊँगी! सुनो! बच्ची हो तो पेट दिखाऊँगी। सहोदर हो तो भुजा दिखाऊँगी! वैसे सहोदर के बारे में नहीं पूछ रही हो। ऐसी बच्ची के बारे में पूछ

रही हो। वह स्त्री है या मरद है? पूछ रही हो। हे बेटा! यह देखो! बच्ची हो तो कान दिखाऊँगी। बच्चा हो तो दाढी दिखाऊँगी। यह देखो वैसे तुम बच्चे के बारे में नहीं पूछ रही हो। वैसे बच्ची के बारे में पूछ रही हो। हे माई! हे माई! अब तुम्हारी बच्ची को एक चिंता सताने लगी है। वह चिंता क्या है? पूछने से बताऊँगी। सुनो री! कलवाले दिन में तुम्हारी बेटी ने पुष्प वन में एक घोडे पर आरूढ़ काले स्वामी को देखकर मोहित हुई है। री! वह काला स्वामी कहाँ रहता है? किस गाँव में रहता है, पूछो बेटा! यहाँ देखो इस कोने में है। इस कोने में है तो मालूम है न बेटा? नहीं मालूम है तो! यह देखो यहाँ से वायव्य भाग में फणों सहित चमकनेवाले सोने के पहाड पर है। हे माई! वह कौन है? पूछने पर वह तिरुनाम धारण करनेवाला है। सफेद पक्षी पर चढकर सारी दिशाओं को जीतनेवाले काला स्वामी है हे माई! वह सचमुच ही श्रीमन्नारायण है। वह मनुष्य नहीं है। नहीं माई! नहीं माई! वह तुम्हारी बेटी के साथ विवाह करना चाह रहा है। तुम्हारी बेटी को उसी से विवाह कर लेना चाहिए। इसे उसी को देकर विवाह करने से तुम्हारी बेटी अत्यंत सुखी रहेगी। नहीं हो तो उसे अनेक कष्ट सताएंगे।'' कहते सुनकर धरणी देवी ने भीलनी को देखकर इस रूप में कहा। ''हे भीलनी! तुम्हारी बातें माया जैसी लग रही हैं। मनुष्य की कन्याओं के साथ कहीं धरती पर नारायण विवाह करते हैं? ऐसा कभी हुआ है?'' विचित्र ढंग से वह हँस कर बोलने से सुनकर भीलनी ने कहा। ''वह स्वामी हाथी का पीछा करते हुए आकर तुम्हारी बेटी के रहनेवाले वन में पहुँचा था। अपने कुल, गोत्र, अपनी कामना के बारे में उसने तुम्हारी लाडली बेटी को बताया था। तुम्हारी बेटी ने उससे निष्ठूर बातें कह कर उस के द्वारा आरूढ़ घोडे पर पथराव करवाया था। घोडा घायल होकर नीचे गिर गया था। वह तुम्हारी बेटी को क्षमा करके वेंकटाद्री पहाड पर वापस लौट गया। तब तुम्हारी बेटी को काम मूर्छा लगी है। विरह ताप के ज्वर से पीडित हो गयी। उस ज्वर को ठीक करनेवाला कोई और औषध नहीं है। कमलनयन के चेहरे को अपनी बेटी को दिखाओ। तब तुम्हारी बेटी का ज्वर उतर जाएगा।'' भीलनी के इस रूप में कहने पर धरणी देवी ने कहा। ''कमललोचन कहाँ? हमारी कन्या कहाँ? उसे हमारी बेटी ने कैसे देखा? यह मोह ज्वर कैसे उतर जाएगा? यह सब तुम्हारा नाटक तो नहीं है? सुनते सुनते यह सफेद झूठ लग रहा है। धरती पर ऐसा हो सकता है?'' कहने से भीलनी ने इस रूप में कहा।

''हे माई! हे माई! मेरी बात सच होगी। अभी थोडी देर बाद विवाह की बात चलाने के लिए संतोष के साथ उस वेंकटेश्वर के द्वारा भेजी गयी एक कन्या आयेगी। तब मेरी बात पर विश्वास करेगी। अब तुम्हें कितना समझाने पर भी तुम विश्वास नहीं करोगी। अगर ऐसा होगा तो हे धरणी देवी! मुझे बुलाकर बाद में उपहार देना। अभी मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस अब मुझे आज्ञा दीजिए। तुम्हारी बेटी के विवाह में फिर अपने बेटे के साथ यहाँ पर आऊँगी। हे रानी! मेरी बात सही है या झूठ है अपनी लाडली बेटी से ही पूछो। हे माई! हे माई! मैं अपने पेट के लिए झूठ बोल रही हूँ। ऐसा तुम संशय कर रही हो। यह झूठ नहीं है। न ही कोई नाटक है। बडबोली नहीं है। न कोई चमकानेवाली, न ही कोई भ्रांति में डालनेवाली है। कोई आडंबर की बात भी नहीं है। मेरी बातें, मेरी भविष्यवाणी, इस टोकरी की कसम है। मेरे बेटे की कसम यह सच है।'' ऐसा विश्वास दिलाते तुरंत उठकर परम पुरुष वेंकटेश्वर अपने निजी रूप को धारण करके वेंकटाद्री पर लौट आये। तब धरणी देवी ने आश्चर्यचकित होकर अपनी बेटी पद्मावती के पास जाकर इस रूप में कहा।

क्रमशः

# चक्रस्नान

- डॉ.बी.के.माधवी

*''महाज्ञानतयो भित्वा कृत्वा ज्ञानप्रकाशनम्।*

*त्वन्मार्ग दर्शनार्थाय चक्ररेखां पदे धरः।।''*

सुदर्शन चक्र, जिसे चक्रत्ताल्वार भी कहा जाता है, यह भगवान विष्णु का एक शक्तिशाली हथियार है। यह एक घूमता हुआ चक्र है जो भगवान विष्णु के हाथों में रहता है। और इसका उपयोग दुष्टों का नाश करने और धर्म की रक्षा करने के लिए किया जाता है। कुछ पौराणिक कथाओं के अनुसार, सुदर्शन चक्र का निर्माण ब्रह्म, विष्णु और महेश की संयुक्त ऊर्जा से हुआ था। विभिन्न पुराणों और ग्रंथों में सुदर्शन चक्र को भगवान विष्णु को समर्पित करने की कथाएँ मिलती हैं। कुछ ग्रंथों के अनुसार यह भी कहा जाता है कि देवताओं के गुरु बृहस्पति ने भगवान विष्णु को यह चक्र उपहार में दिया था। एक अन्य कथा में, भगवान कृष्ण को यह चक्र परशुराम से प्राप्त हुआ था। सुदर्शन चक्र भगवान विष्णु का प्रमुख प्रतीक है, जो उनकी शक्ति, न्याय और सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। इसे एक शक्तिशाली हथियार माना जाता है, जो नकारात्मकता को नष्ट करने, शत्रुओं पर विजय पाने और बुरी नजर से बचने में मदद करता है।

सुदर्शन चक्र अज्ञान, अहंकार और अधर्म के विनाश का प्रतीक भी है; और यह आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने में मदद करता है। कुछ मान्यताओं के अनुसार, सुदर्शन चक्र में 108 तीलियाँ होती हैं जो हिंदू धर्म में पवित्र और ब्रह्मांडीय संख्या मानी जाती है।

सुदर्शन चक्र को विष्णु मंदिरों में एक महत्वपूर्ण देवता के रूप में पूजा जाता है और इसे चक्रत्ताल्वार के रूप में जाना जाता है।

तिरुमल मंदिर में चक्रत्ताल्वार का विशेष महत्व है। यह भगवान वेंकटेश्वर के शस्त्रों में से एक है, और पूजा के दौरान इसका उपयोग विशेष अनुष्ठानों में किया जाता है। यह मंदिर, जो भगवान विष्णु के अवतार, वेंकटेश्वर को समर्पित है, श्री वेंकटेश्वर स्वामी तिरुमल के पहाडों पर स्थित है।

चक्रत्ताल्वार भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दाहिने हाथ में धारण किया जानेवाला एक शक्तिशाली अस्त्र है। तिरुमल मंदिर में, चक्रत्ताल्वार को नियमित रूप से पूजा जाता है और यह मंदिर के महत्वपूर्ण अनुष्ठानों का हिस्सा है। तिरुमल मंदिर में चक्रत्ताल्वार को भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति के साथ, विशेष अवसरों पर पूजा जाता है। यह शस्त्र, विशेष रूप से, 'सुप्रभात सेवा' और 'आरती' जैसे अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चक्रत्ताल्वार की पूजा, भगवान वेंकटेश्वर की शक्ति और सुरक्षा का प्रतीक मानी जाती है। भक्तजन उत्सवों के समय या चक्रस्नान के समय चक्रत्ताल्वार के दर्शन करके, भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करने की प्रार्थना करते हैं। श्री वेंकटेश्वर स्वामी जो विष्णु के अवतार हैं और माना जाता है कि कलियुग के कष्टों और विपत्तियों से मानव जाति को बचाने के लिए यहाँ प्रकट हुए थे। पूरे देश में विष्णु के अन्य सभी पवित्र स्थलों की तरह, तिरुमल में सुदर्शन द्वारा विष्णु की सेवा का भी आध्यात्मिक, दिव्य, भक्तिपूर्ण और यहाँ तक कि स्थलाकृतिक महत्व है। आध्यात्मिक रूप से सुदर्शन या चक्रनाथ भगवान विष्णु का वह तेज है जो संसार के सभी आसुरी तत्वों का नाश करता है। जहाँ तक दैवीय तत्व का सवाल है, सुदर्शन चक्र भगवान विष्णु के सबसे करीबी निजी अस्त्र-शस्त्र अनुचरों में से एक है, जबकि अन्य पांचजन्य-शंख, कौमोदकी-गदा, सारंग-धनुष और नंदक-खड्ग। विष्णु के इन पाँचों विशेष अस्त्रों के साकार रूप भी हैं। अतः एक मुख्य प्राणी के रूप में सुदर्शन मूलतः वैकुण्ठ में श्री महाविष्णु की वास में निवास करते हैं। साथ ही, वे जहाँ भी जाते हैं, विष्णु के साथ चलते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भागवत में गजेंद्र मोक्ष की कथा के द्वारा विदित होता है जो गजेंद्र की प्रार्थना सुनकर विष्णु भगवान उसकी रक्षा करने के लिए बिना किसी से बताकर वैकुण्ठ से दौड आते हैं। पहले सुदर्शन को भेजकर गजेन्द्र की रक्षा किया हैं।

इस प्रकार संसार के समस्त विष्णु तीर्थों में सुदर्शन की अनंतशक्ति देवों के देव की सेवा के लिए व्याप्त है।

भक्ति पक्ष से सुदर्शन भगवान विष्णु के परम भक्त थे और अपने स्वामी पर पूर्ण विश्वास रखते हुए तथा भगवान के भक्तों के प्रति अत्यंत स्नेह रखते हुए वे सदैव भगवान विष्णु के भक्तों की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे। सुदर्शन चक्र के ये तीनों आध्यात्मिक, दिव्य और भक्तिमय पहलू सदियों से तिरुमल में भगवान श्रीनिवास के भक्तों के अनुभव में रहे हैं। इसीलिए श्री वेंकटेश्वर की प्रभा सदैव दो महान अस्त्रों, चक्र-सुदर्शन और शंख-पांचजन्य के माध्यम से जगत के समक्ष प्रकट होती है। यहाँ सुदर्शन का दिव्य तत्व भी अतीत के अनेक भक्तों द्वारा स्पष्ट रूप से देखा गया था।

किसने हमेशा भगवान श्रीनिवास के चरणों की महिमा को सुनते रहते हैं ऐसे लोगों के अज्ञान को दूर करके आत्मज्ञान रूपी इस दिव्य सुदर्शन अनुग्रह देती है। ऐसे सदाचार्य ने सुदर्शन की महिमा का उल्लेख किये हैं-

*सुदर्शन महाज्वाल कोटिसूर्यसमप्रभ।*
*अज्ञानांधस्य मे देव विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय।।*

गजेन्द्र मोक्ष में मकर की पीडा से हाथी की रक्षा सुदर्शन ही दिया है। किसी भी कार्य में भगवान के

प्रतिरूप में सुदर्शन का ही पूजा करना हम उत्सवों में देखते हैं।

तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी की सन्निधि में चक्रत्ताल्वार की अत्यंत विशिष्टता है। ब्रह्मोत्सवों के संदर्भ में अंतिम दिन (नौवें) चक्रस्नान से परिसमाप्ति होता है। यह यज्ञांत में आचरित अवभृथस्नान ही है। यज्ञ की परिसमाप्ति में अवभृथस्नान करना सांप्रदाय है। अवभृथस्नान में चक्रत्ताल्वार को श्रीदेवी-भूदेवी सहित मलयप्पस्वामी को श्री वराहस्वामी मंदिर के प्रांगण में वेंचेपु करके पंचामृत स्नपन तिरुमंजन करते हैं। इस में उभय देवेरियों के साथ रहे श्री मलयप्पस्वामी सहित चक्रत्ताल्वार दूध, दही, घी आदि से अर्चकों के द्वारा किये गये अभिषेक कैंकर्य को स्वीकार करके धूप-दीपादिक से प्रसन्न होता है। इसके बाद श्री सुदर्शन चक्रत्ताल्वार को पुष्करिणी में तीन बार डुबुकियाँ लगाते हुए पवित्रस्नान करवाते हैं। इस चक्रस्नान के समय

वेदमंत्रोच्छारण होते समय, भक्तजन गोविंद, गोविंद कहते हुए पुष्करिणी में चक्रत्ताल्वार के साथ डुबुकियाँ लगाते हैं। इस चक्रस्नान को ही अवभृथस्नान कहते हैं। चक्रस्नान के समय अर्चकगण, अधिकारियों, भक्तजन सब पुष्करिणी में स्नान करते हैं। यज्ञ फल के अधिकारी होते हैं। पर, व्यूह, विभव, अंतर्यामि, अर्चारूपों में स्वामी के अंतिम रूप अर्चा विग्रह को किये गये इन उत्सवों का संदर्शन फल मिलता है। चक्रस्नान के साथ ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति हो जाती है। शाम को ध्वजावरोहण से ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति प्रकटित हो जाता है। चक्रस्नान के समय भक्तजन पुष्करिणी में स्नान करने से पापविमुक्ति, शत्रुमर्धनं, वाग्वृद्धि, धन-धान्य संपत्तियाँ, विषमृत्युनाशन, राज्याधिकार मिलने की सूचना प्राप्त होता है।

तिरुमल पुष्करिणी में चक्रस्नान साल में चार बार करते है। एक ब्रह्मोत्सवों के संदर्भ में, दूसरा रथसप्तमी के संदर्भ में, तीसरा अनंतपद्मनाभस्वामी व्रत के दिन चौथा वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में द्वादश घडियों में थे चक्रस्नान होते हैं। इतना ही नहीं तिरुचानूर में श्री पद्मावती देवी के कार्तिक ब्रह्मोत्सवों के संदर्भ में अंतिम दिन 'पंचमीतीर्थ' महोत्सव में भी चक्रस्नान से परिसमाप्ति होती है।

स्वामिपुष्करिणी अत्यंत पवित्र है। ऐसे पवित्र पुष्करिणी में चक्रस्नान के समय स्नान करने का सौभाग्य मिलना असाध्य है। स्वामी की कृपा मिलने से ही यह संभव हो सकता है। अत्यंत महिमान्वित सुदर्शन चक्र के चक्रस्नान के समय पुष्करिणी में भक्तजन डुबुकियाँ लगाना अत्यंत सौभाग्य की बात है। ब्रह्मोत्सव के दिनों में मलयप्पस्वामी की कृपा मिलना सौभाग्य है तो अंतिम दिन स्वामिपुष्करिणी में चक्रस्नान देखना या डुबुकियाँ लगाना अत्यंत फलदायक है। चक्रस्नान के समय हमें भी ऐसे सौभाग्य मिलने की आशा करते हुए भगवान से प्रार्थना करेंगे।

# विजयदशमी के दिन शमीवृक्ष की आराधना

- डॉ.पी.बालाजी

भारत त्योहारों का देश है। हर त्योहार की अपनी एक खासियत है और एक धार्मिक महत्व है। भारत में मनाने वाले त्योहारों में दशहरा एक प्रमुख बड़े त्योहार है। दशहरा त्योहार को विजयदशमी भी कहते है। विजयदशमी एक प्रमुख हिंदू त्योहार है। विजयदशमी माने विजय - विजय, जीत, जय, सफलता और कामयाबी; दशमी माने - दसवाँ दिन, दस और दशहरा। जो धार्मिक कथाओं के अनुसार दसवें दिन बुराई पर अच्छाई की जीत मनानेवाले एक त्योहार है। जो अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है इस त्योहार। इसी दिन माता कात्यायनी दुर्गा ने देवताओं के अनुरोध पर नौ दिनों तक महिषासुर राक्षस के साथ युद्ध किया और दशमी तिथि को उसे पराजित कर धर्म की स्थापना की। इसलिए देश के विभिन्न हिस्सों में नवरात्रि पर रामलीला होती है। इस आमतौर पर दुर्गा पूजा भी कहते है। असत्य पर सत्य की जीत के रूप में इस पर्व को मनाया जाता है। इसी दिन देवी दुर्गा ने महिषा नामक राक्षस को मारकर लोगों को मुक्ति दिया।

पौराणिक के अनुसार भगवान राम ने दशमी तिथि के दिन रावणासुर को वध किया था। इस कथा के अनुसार विजय हमेशा धर्म के पक्ष में ही मिलता है अधर्म से ही नहीं। इस दिन शमी पेड को पूजा करते है। दशहरा के शुभदिन शमी के पेड का विशेष महत्व है। इस दिन को 'शमी पूजा' या 'शमीवृक्ष पूजन की दिन' भी कहा जाता है।

पौराणिक के अनुसार भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त करने से पहले शमीवृक्ष को पूजा किया था। महाभारत काल में भी पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान अपने हथियार शमी के पेड में छुपाए थे और बाद में दशहरा के दिन उन्होंने पेड से अपने हथियार वापस लिए और पूजा की। इस कारण से शमी के पेड को विजय और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। दशहरा के दिन शमी पेड को अत्यंत श्रद्धा, भक्ति के साथ पूजा करते है।

विजयदशमी के दिन शमी पेड के पत्तों को एक दूसरों को बाँटते है जिसे स्वर्ण के प्रतीक समझा जाता है। इस पत्ते के वृक्ष की पूजा करने से शनि दोष के साथ ही सभी तरह के राहु और केतु के दोष भी समाप्त हो जाते है। दशहरा के दिन कुबेर ने राजा रघु को स्वर्ण मुद्रा देते हुए शमी की पत्तियों को सोने का

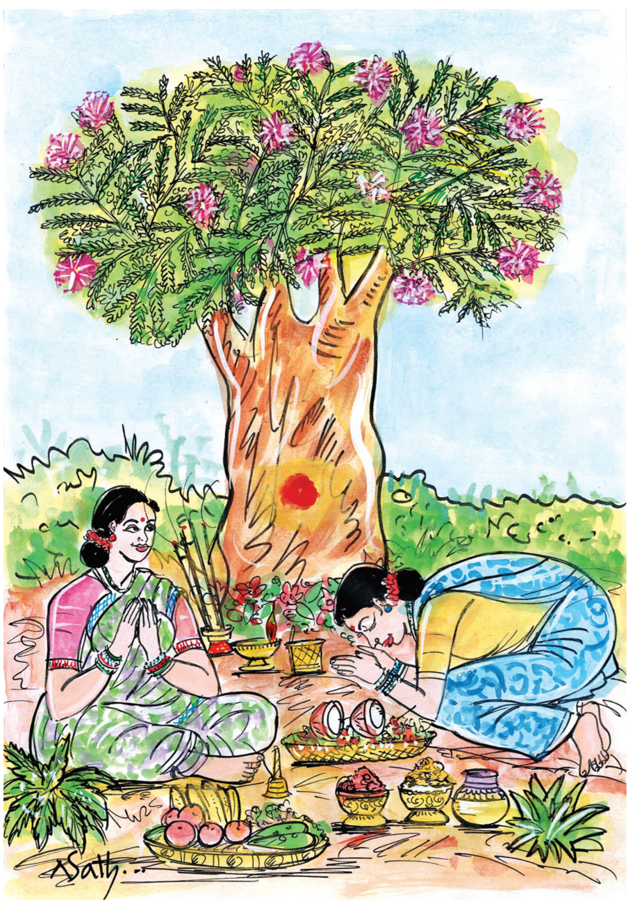

**श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः**

**हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!**

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

**श्री वेंकटेशाय नमः।**

**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।**

**ॐ नमो नारायणाय।**

बना दिया था, तभी से शमी को सोना देनेवाला पेड माना जाता है।

शमी पेड का दूसरी नाम खोजड़ी है। इस पेड को कई स्थानों पर कांडी, जंड या सुमरी के नाम से भी जाना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार शमी पेड का उपयोग बहुत ज्यादा है।

आयुर्वेद के अनुसार शरीर के कफ तथा पित्त दोष को संतुलित करने में बिच्छु के काटने, रक्तस्राव संबंधी विकारों और आँखे तथा चेहरे में जलन के इलाज में भी लाभकारी है। तुलसी के पौधे जितना ही उपयोग होता है उतनी ही फल शमी पौधे से भी मिलते है। इसके फल, पत्ते, जड और जूस को चढाने से शनिदेव के प्रतिकूल प्रभाव को कम किया जा सकता है। इस धरती पर अनेक महान महान वृक्ष है हर वृक्ष के आकार, रंग, सुगंध, फल व फूल सभी विभिन्न प्रभावों के कारण अलग-अलग ग्रहों से जुडे होते है। उदाहरण के लिए तुलसी की पूजा लगभग हर हिंदू घर में की जाती है।

इसी तरह शमी के पौधे की पूजा करना बहुत शुभ माना जाता है। शमी का पेड काफी पवित्र और महत्वपूर्ण है। प्राचीन काल से इसकी पूजा की जाती रही है। घर में सकारात्मकता और समृद्धि लाने के साथ-साथ यह उसकी खूबसूरती में भी विस्तार करता है। घरों में शमी का पेड लगाने से सुख, शांति व धन की प्राप्ति होती है, साथ ही यह नकारात्मक ऊर्जा से भी बचाता है। हिंदू धर्म में शमी के पौधे का संबंध शनिदेव और भगवान परमेश्वर से माना गया है। साथ ही वास्तु की दृष्टि से भी इस पौधे को काफी शुभ माना गया है।

**श्लोक :** *अमंगलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।*
*दुःस्वप्नाशिनीं धन्यां प्रपद्येहं शमीं शुभाम्।।*

मान्यता है कि शमी के पेड को भगवान शिव का वास होता है, इसलिए इसकी पूजा भगवान शिव की पूजा के समान मानी जाती है।

विजयदशमी त्योहार के द्वारा सामाजिक और नैतिक संदेश हमें पता चलता है। इसी दिन महत्वपूर्ण शमी पेड का पूजा करना और सेवन करना अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

शमी पूजा का मंत्र (या) शमी पेड प्रदक्षिण करते समय उच्चारण करनेवाले मंत्र :

*शमी शमय ते पापं, शमी शत्रु विनाशिनी।*
*अर्जुनस्य धनुर्धारी, रामस्य प्रियदर्शिनी।*
*शमीं कमलपत्राक्षीं शमीं कंटकधारिणीम्।*
*आरोहतु शमीं लक्ष्मीं नृणामायुष्यवर्धनीम्।।*

इसका अर्थ है : शमी वृक्ष सर्वपापों को नाश करता है, शत्रुओं को नष्ट करता है। इस पेड अर्जुन का धनुष धारण करनेवाला और भगवान श्रीरामचंद्र को अत्यंत प्रिय है। शमी पेड को पूजा करने से सभी पापों को नष्ट और शत्रुओं को विनाश के लिए विजयदशमी (या) दशहरा त्योहार में केवल एक बार पूजा या प्रार्थना करने से आपको वर्षभर समृद्धि और सफलता मिलती हैं। इस प्रकार दशहरा का त्योहार केवल धार्मिक ही नही, संस्कृत और सामाजिक महत्व भी होनेवाले एक प्रमुख त्योहार है।


## सप्तगिरि ग्राहकों को सूचना

अगर कोई सप्तगिरि ग्राहक के घर का पता परिवर्तन हुई तो संबंधित समाचार सप्तगिरि कार्यालय को लेख लीखकर या ई-मेइल से सूचना देना अनिवार्य है। निम्न सूचित कार्यालय पता या ई-मेइल से समाचार दीजिए।

**कार्यालय पता :** प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला (आं.प्र.) **(या)** ई-मेइल आई.डी. chiefeditortpt@gmail.com

(गतांक से)

# तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

## (तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

श्रीगोविंदराज स्वामी के मंदिर में मुख-द्वार और अन्य तीन गोपुरों के मध्य स्थित मूर्ति पार्थसारथी की है (पार्थसारथी कृष्ण ही हैं जो महाभारत युद्ध में अर्जुन के रथसारथी थे)। यह मूर्ति शायद बहुत पुरानी ही होगी। उसके पास ही उत्तर दिशा में गोविंदराज स्वामी की मूर्ति है। इस मूर्ति की 12वीं अथवा 13वीं शताब्दी के आरंभ में स्थापना की गयी होगी। सारी सांदर्भिक सूचनाएँ शिलालेखों और अभिलेखों से प्राप्त होती हैं वे श्री गोविंदराज स्वामी से संबन्धित हैं। उनमें एक में भी पार्थसारथी का उल्लेख नहीं हैं। ये सब 13वीं शताब्दी की ही हैं। वर्तमान समय में पार्थसारथी की मूर्ति ढ़की हुई है। मंदिर बंद है और कोई पूजा आदि कार्यक्रम नहीं चल रहे हैं। इसका कारण यही बताया जाता है कि मूर्ति अपांग हो गयी है। अतः ऐसी मूर्ति की पूजाएँ नहीं होती। ऐसा कब पता चला और कब हुआ, इसका कोई समाचार नहीं मिलता है। अगर ऐसा श्री गोविंदराज स्वामी की प्रतिष्ठा से पहले हुआ होता तो उसी वक्त उस मूर्ति को निकाल कर उसके स्थान पर श्री गोविंदराज स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई होगी।

तिरुपति की पश्चिमी दिशा में नरसिंह तीर्थम् है। यह पेय जल तटाकम् है। उसके पास एक बडा नील वर्ण मूर्ति है। यह गोविंदराज की ही मानी जाती है। सिर पर ताज सहित यह मूर्ति लगभग आठ फुट की है। विश्वास किया जाता है कि पहले गोविंदराज स्वामी मंदिर में इसी मूर्ति की आराधना होती रही होगी। क्षति पहुँचने के बाद उस मूर्ति को इस तटाक पर रख छोडा गया। यह मूर्ति कब मंदिर में रखी गयी और कब टूटी तथा कब उसे यहाँ रखा गया, इसकी कोई सूचना नहीं मिलती। आज की मूर्ति उस मूर्ति के स्थान पर प्रतिष्ठित मूर्ति होगी। शायद चिदंबरम् के पास समुद्र में फेंकी गयी मूर्ति के स्थान पर प्रतिष्ठित मूर्ति ही आज की मूर्ति हो। चोल राजा के हाथों पूर्व मूर्ति समुद्र में फेंक दी गयी थी। लेकिन इस संबन्ध में किसी प्रकार की उल्लेखित सूचनाएँ प्राप्त नहीं हैं। केवल संख्या 40 में उक्त मूर्ति के बारे में सूचित है- ''तिरुप्पतियिल चित्रमेळि - विण्णगरान श्री गोविंदपेरुमाल कोइलिल्''। विस्थापित मूर्ति को हानि शायद दक्षिण के मुसलमानी आक्रमणों के समय में पहुँचायी गयी हो। ये आक्रमण सन् 1310 ई. में मालिक कफ़ूर के समय में अथवा 17वीं शती के औरंगजेब के

शासन काल में हुए हों। मालिक कफूर दक्खन के गवर्नर थे। ये शाहजहान द्वारा नियुक्त थे अथवा गोलकोंडा के सुलतान अब्दुल्ला से, यह स्पष्ट नहीं है। गोविंदराज स्वामी मंदिर में आजकल की उत्सवमूर्ति जो है उसके बारे में समझा जाता है कि यह मूर्ति पार्थसारथी स्वामी की मूर्ति है[1] जो पहले बिना पूजा पाठ के रही है।

पल्लव राजकुमारी सामवाय ने एक चाँदी की मूर्ति बनवायी। मनवालपेरुमाल की यह मूर्ति तिरुमल श्री वेंकटेश्वर मूर्ति के समान थी। उसका पवित्रीकरण करवाकर पूर्णरूप से स्वर्ण भूषणों से सुसज्जित करवाकर एक दीप कलश के साथ सामवाय ने अर्पित किया। दैनिक नैवेद्य आदि की व्यवस्था भी करवायी। साथ-साथ पुरट्टासि महीने (सितंबर) में 11 दिनों के लिए, मार्गलि (दिसंबर) के उत्सव के लिए आवश्यक देवदानों की व्यवस्था भी उन्होंने की है (संख्या 8 और संख्या 9)। संख्या 61 में तमिल मास चित्तिरै (मई) में एक और नये उत्सव की सूचना पाते है। यह विजयगंड गोपाल के राज्य वर्ष 14वें या 24वें वर्ष से संबन्धित है (अर्थात् सन् 1264 या 1274 ई. से)। ये उत्सव श्री वेंकटेश्वर स्वामी से संबन्धित हैं। इनकी संख्या विजयनगर शासन काल में 7 थी। लेकिन आगे 10 की गयीं। ये उत्सव हर महीने एक उत्सव के रूप में मनाये जाने लगे हैं। केवल वैकाशी और आणि मासों में उत्सव तिरुपति के गोविंदराज स्वामी के मंदिर में संपन्न होते रहे हैं। ऐसा लगता है कि पुरट्टासि और पंगुनि मासों में संपन्न होनेवाले उत्सवों में ही सात या दस उत्सव श्री वेंकटेश्वर भगवान के मनाये जाते हैं और उस समय उत्सवों के आठवें दिन पर रथोत्सव संपन्न होता है (संख्या 96 तथा संख्या 133, जिल्द II)। श्री गोविंदराज स्वामी के संदर्भ में जिस प्रकार 19वीं शताब्दी में समस्त उत्सव रोक दिये गये हैं उसी प्रकार श्री वेंकटेश्वर भगवन के मंदिर के भी रोक दिये गये। केवल पुरट्टासि मास का उत्सव ही बिना रोक के मनवाया जाता रहा है।

संख्या 62 में एक ज्योति कलश और अप्प-पडि (एक प्रकार की मीठी पकवान जो चावल के आटे और गुड के मिश्रण से तैयार कर घी में पकाया जाता है) के प्रावधान की बात सूचित है। यह श्री वेंकटेश्वर भगवान के लिए अर्पित है। तदार्थ 3 गंडगोपालन-माडै (राजा के नाम पर मुद्रित स्वर्ण मुद्राएँ जिन पर उनके विस्तार रूप से और शक्ति की सूचना है) प्रदान किये गये हैं।

संख्या 63 तथा 64 में गोदान (गायों की भेंट) का उल्लेख है। यह तिरुवेंकटमुडैयान के मंदिर में ज्योति-प्रज्वल निर्मित है। यह ज्योति दान राजा विजयगंडगोपाल की रानी देवरसियार द्वारा किया गया है।

संख्या 67 में 32 गायों और एक साँड (वृषभ) के दान का उल्लेख है। यह पुरट्टासि मास में संपन्न होनेवाले उत्सव में ज्योति प्रज्वलन के लिए है। (घी से ज्योति प्रज्वलन होता है।)। इसके साथ-साथ 15 माडै का भी दान है जो कर्पूर ज्योति के लिए स्थाई दान है।

संख्या 68 और संख्या 69, ''वराहन्-पणम्'' 450 की प्रतिभूति धनराशि का उल्लेख करता है। 'वराह-पणम्' तांबा या चाँदी का

1. जो पहले बिना पूजा पाठ के रही है।

- गोपी कृष्ण

सिक्का है जिस पर वराह स्वामी की मूर्ति अंकित है। यह नैवेद्य अर्पण के लिए है। यह नैवेद्य संधि (प्रातःकाल) के दो सांप्रदायिक अनुष्ठानों या पूजाओं के बीच संपन्न किया जाता है। संख्या 68 ''उच्चियिलेनिंड्र - नारायणन्'' को चावल आदि मापने का एक माप बताता है जो श्री वेंकटेश्वर भगवान के अर्पण के लिए चावल आदि को माप कर प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग में रहता है। इस अभिव्यक्ति का अर्थ है ''भगवान विष्णु, नारायण, जो पर्वत पर अधिष्ठित रहते हैं। यह नाम संख्या 74 में केवल ''निन्नान्'' के रूप में उल्लिखित है। आगे इस नाम को ''मलैकिनिय - निन्नान्'' के रूप में परिवर्तित किया गया अर्थात् 'मरक्कल' या 'तूंबु'। यह तभी हुआ जब उत्सवमूर्ति ''मलैकिनिय-निन्न - पेरुमाल'' उनकी दो देवेरियों (नाच्चियार) के साथ जोडे गये हैं। यह 13वीं शताब्दी के प्रथम अर्द्ध पक्ष में हुआ

है। श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर में उपयोग का जो माप था उसका नाम ''चालुक्य - नारायनन् - काल'' था।

संख्या 70 भी 450 'वराहन्-पणम्' का उल्लेख करता है। यह श्री भंडारम् को एक 'तिरुप्पोनकम' (मूँग की दाल और चावल को नमक डालकर घी में पकाकर प्रस्तुत किया जानेवाला एक अन्ननिवेदन ही पोंगल) के लिए आवश्यक सामग्री कालीमिर्च के साथ खरीदने के लिए दिया गया देवदान है। यह दान विक्रमदेवीपुरम् के एक 'सालिया' (बुनकर) ने अर्पित किया है।

संख्या 71 और संख्या 72 में अंकित है एक 'नंदाविलक्कु' (स्थायी ज्योति) के लिए आधा और एक ज्योति के लिए आठवाँ अंशदान एक 'सालिया' (बुनकर) द्वारा प्रदत्त हुआ है। हो सकता है कि दोनों अंशों को मिलाकर एक ज्योति के लिए हो। संख्या 164 में उल्लिखित तीन बटे आठ अनुदान सहित यह पूरा होता होगा।

संख्या 73 में अन्न-प्रसाद से संबन्धित एक और उल्लेख मिलता है। यह तिरुवेंकटम्-उडैयान के लिए है। यह उत्सव समयों में मंटपम् में विराजमान होनेवाले भगवान के लिए हो सकता है। तदार्थ 3 - माडै (स्वर्ण मुद्राएँ) पूँजी के रूप में विक्रमदेवीपुरम् के सालिया (बुनकरों) के मुखिया के नाम पर प्रस्तुत हुआ है। यह मंटपम् का (मंडप का) प्रथम उल्लेख है। उत्सवमूर्तियों को दिये जानेवाले निवेदनों की, (मंदिर से बाहर होते हैं,) पहली बार मिलनेवाली सूचना है।

संख्या 74 सित्तिरै और पुरट्टासि मासों में श्री वेंकटेश्वर भगवान से संबन्धित उत्सव में अर्पित ''तिरुप्पावै-पडि'' के लिए अन्नप्रसाद के लिए प्रदत्त देवदान से संबन्धित समाचार प्रस्तुत करता है। यह उत्सव श्री आंडाल द्वारा रचित 'तिरुप्पावै' गीत गान संदर्भ से संबद्ध है। (विजयगंडगोपाल राजा के 14वें या 24वें राज्य वर्ष में (सन् 1264 या 1274 ई. में) संख्या 61 में हम पाते हैं कि ''तिरुमोलि-पडि'' के लिए दैनिक और वैकासी उत्सव के लिए श्री गोविंदराज स्वामी के लिए प्रावधान है। संख्या 74 में ''तिरुप्पावै-पडि'' का प्रावधान गंडगोपालन-माडै की प्रतिभूति धनराशि से व्यवस्थित है। इससे एक और सूचना भी मिलती है कि इस समय के दर्मियान ''तमिल प्रबन्धम्'' की प्रथम प्रस्तुति का भी आरंभ हुआ है। यह ''प्रबन्धम्'' चार हजार देव स्तुतिपरक गीतों का संग्रह है। इसकी रचना 12 वैष्णव आल्वारों के द्वारा हुई है। इनमें प्रधानतः ''नाच्चियार - तिरुमोलि'', कुलशेखर आल्वार तिरुमोलि और तिरुमंगै आल्वार तथा आंडाल के तिरुप्पावै प्रथम स्थान में हैं। ये

विशेषतः श्री वेंकटेश्वर स्वामी और श्री गोविंदराज स्वामी दोनों के मंदिरों से संबद्ध होकर हैं)।

संख्या 75 दो और उत्सवों को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। श्री वेंकटेश्वर भगवान से संबद्ध ये दो उत्सव हैं- पुरट्टासि और चित्तिरै मासों के उत्सव।

संख्या 77 से लगता है कि प्राचीन स्वर्ण मुद्राएँ और ''माडै'' जिन पर पुराने चिह्न थे, दोनों को एक मानता है जो संभवतः साढे सात ''वराह-पणम्'' हैं।

संख्या 78 ''पुष्पमंटपम्'' के निर्माण का समाचार हमें प्राप्त कराता है। पुष्प वाटिका में एक मंटप और फुलवारी है। यह तिरुमल पर है। तदार्थ एक ''अप्प-पडि'' के लिए देवदान है। यह उत्सवों के समय उत्सवमूर्ति को अर्पित होता है। उस के लिए 3 माडाओं की पूँजी दी गयी है। यह विजयगंडगोपाल राजा के राज्य काल के पाँचवें वर्ष में व्यवस्थित किया गया है (सन् 1255)।

संख्या 79 के 6 खण्डों में D खण्ड में एक सौम्य वर्ष, रामानुज और एमपेरुमानार का उल्लेख है। सभी 6 खण्ड विजयगंडगोपाल के समय से संबद्ध हैं। प्रधानतः यह 13वीं शताब्दी के तृतीय और चतुर्थ त्रैमासों से संबद्ध हैं। हो सकता है कि उक्त बातें श्री रामानुजाचार्य द्वारा तिरुमल मंदिर में आवर्ती (चक्रीय) वर्ष सौम्य वर्ष में नियोजित कुछ समर्पणों से संबन्धित हो (सन् 1248 - 49 ई.)। यह तारीख रामानुजाचार्य के देहावसान (सन् 1137 - 38 ई.) यानी 110 वर्ष के बाद का है।

क्रमशः


तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

## तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माड़ावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

गतांक से

# श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

**उण्णिन्ड्डु उयर्गलुक्कु उट्रनवे शेय्दु, अवर्क्कुयवे,**
**पण्णुम् परनुम् परिविलनाम्पडि, पल्लुयिर्क्कुम्**
**विण्णिन् तलैनिंड्डु वीडळिप्पान् एम्रामानुजन्**
**मण्णिन् तलत्तुदित्तु, मरैनालुम् वळर्त्तननेे॥९५॥**

सकलात्मनामन्तर्यामी सन् हितप्रवर्तको भूत्वा तदुज्जीवनैकनिष्णातो भगवान्नारायणोऽपि लघिष्ठकरुण एवेति वक्तव्यतामापादयन् भगवान् रामानुजः सकलात्मनां मुक्त्यनुग्रहाय श्रीवैकुण्ठदिव्यधामतो भूतलेऽवतीर्य सर्वोज्जीवनसाधनभूतांतुश्चरोऽपि वेदान् समुल्लासयामास।

समस्त आत्माओं को मोक्षप्रदान करने के लिए श्रीवैकुंठ से भूतल पर अवतार लेकर श्री रामानुज स्वामीजी ने इस प्रकार सबके उज्जीवन हेतु चारों वेदों का पोषण किया, जिसे देख कर कहना पडता है कि समस्त आत्माओं के अंतर्यामी रह कर, सदा उनके उद्धार के ही प्रयत्न करनेवाले भगवान की कृपा भी (श्री स्वामीजी की कृपा की अपेक्षा) कम है। (विवरण-शास्त्र बताता है कि चेतनों के प्रति भगवान की कृपा अत्यद्भुत है। क्योंकि वे सदा इनके उद्धार की चिंता और तदनुगुण प्रयत्न करते रहते हैं। वह प्रयत्न यहाँ तक चल रहा है कि वे सबके हृदय में अंतर्यामी होकर विराजते हुए योग्य अवसर पाकर उन्हें अच्छी प्रेरणा देते हैं। अतः सत्य ही उनकी कृपा अत्यद्भुत है। परंतु श्री रामानुज स्वामीजी की कृपा के साथ तोलन करने पर, कहना पडता है कि भगवान की कृपा अवश्य ही इसे कम है; क्योंकि उन्होंने वैदिक मत के साथ अवैदिक बाह्य व कुदृष्टि मतों का भी प्रचार करवाया। श्री स्वामीजी ने तो एक वैदिक धर्म का प्रचार किया।)

भगवान ने वैदिक मत के साथ अवैदिक, बाह्य व कुदृष्टि मतों का भी प्रचार करवाया परन्तु श्री रामानुज स्वामीजी ने तो एक वैदिक धर्म का ही प्रचार किया।

क्रमशः

# तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव

## दि.17-11-2025 से दि.25-11-2025 तक

| दिनांक | वार | दिन | रात |
|---|---|---|---|
| 17-11-2025 | सोमवार | तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण | लघुशेषवाहन |
| 18-11-2025 | मंगलवार | महाशेषवाहन | हंसवाहन |
| 19-11-2025 | बुधवार | मोतीवितानवाहन | सिंहवाहन |
| 20-11-2025 | गुरुवार | कल्पवृक्षवाहन | हनुमद्वाहन |
| 21-11-2025 | शुक्रवार | पालकी में आरूढ़ मोहिनी अवतारोत्सव | गजवाहन |
| 22-11-2025 | शनिवार | सर्वभूपालवाहन, सा.स्वर्णरथ | गरुड़वाहन |
| 23-11-2025 | रविवार | सूर्यप्रभावाहन | चंद्रप्रभावाहन |
| 24-11-2025 | सोमवार | रथ-यात्रा | अश्ववाहन |
| 25-11-2025 | मंगलवार | पंचमीतीर्थ, चक्रस्नान | ध्वजावरोहण |

## तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का गजवाहन सेवा

गजवाहन ऐश्वर्य या वैभव का प्रतीक है। मदाति तत्त्व अहंकार का भी हाथी प्रतीक है। अनंत ऐश्वर्य, अनन्यसामान्य वैभव का प्रतीक हाथी मदाति संभरित मनोविकार को जीतने की शक्ति प्रसादित करनेवाली माँ अलमेलुमंगा पद्मावती स्वतंत्र वीरलक्ष्मी के रूप में होने के कारण इस गजवाहन को विशिष्ट स्थान है।

''गजवरमधिरूढ़ा शंखचक्रासिशाङ्गो
द्यमित निशितशस्त्रास्त्रोद्‌धृढ़ा शास्त्रवेषु
सुमधुरदरहासेनाश्रितान् हर्षयन्ती
रिपुनिवहनिराशं वीरलक्ष्मीर्विधत्ताम्''

गजवाहन पर जुलूस निकालते हुए माँ वीरलक्ष्मीमूर्ति होकर आश्रितों को अभय प्रदाता, शत्रुनाशन कर, मंदहासयुक्त अधरों से, करुणाकटाक्षों से, दासीभूत जनरक्षकों को माँ सदा संरक्षण करते थे। इसलिए भक्तगण इस वाहन सेवा को संदर्शन कर पुनीत बन जाता हैं।

## श्रीनिवासमंगापुरम्
## श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव

| दिनांक | वार | उत्सव | |
|---|---|---|---|
| 16-10-2025 | गुरुवार | - - - | अंकुरार्पण |
| 17-10-2025 | शुक्रवार | पवित्र प्रतिष्ठा | |
| 18-10-2025 | शनिवार | पवित्र समर्पण | |
| 19-10-2025 | रविवार | पूर्णाहुति | |

## ऋषिकेश
## श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव

| दिनांक | वार | उत्सव | |
|---|---|---|---|
| 05-10-2025 | रविवार | - - - | अंकुरार्पण |
| 06-10-2025 | सोमवार | पवित्र प्रतिष्ठा | |
| 07-10-2025 | मंगलवार | पवित्र समर्पण | |
| 08-10-2025 | बुधवार | पूर्णाहुति | आश्वीयुज मास में संपन्न होते है |

## वाल्मीकिपुरम् (वायल्पाडु)
## श्री पट्टाभिरामस्वामी का पवित्रोत्सव

| दिनांक | वार | उत्सव | |
|---|---|---|---|
| 04-10-2025 | शनिवार | - - - | अंकुरार्पण |
| 05-10-2025 | रविवार | पवित्र प्रतिष्ठा | |
| 06-10-2025 | सोमवार | पवित्र समर्पण | |
| 07-10-2025 | मंगलवार | पूर्णाहुति | आश्वीयुज पूर्णिमा को संपन्न होते है |

# प्रकाशों का त्योहार दीपावली

तेलुगु मूल - एम.विमला
हिन्दी अनुवाद - श्री वेमुनूरि राजमौलि

''दीपावली'' का स्मरण करते ही ''नरकासुर-वध'' की याद आती है। शरीर ही मैं हूँ; ऐसा मानना अज्ञान का विषय है। ''नरक'' रूपी अज्ञान को दूर कर के ज्ञान-ज्योति जलाने वाले ही ''नारायण'' हैं। ऐसा हम इसका अर्थ कह ले सकते हैं। बुराई को भगाकर, अच्छाई को विकसित करके जीवन में प्रकाश भरने देव देव, दामोदर की प्रार्थना करके ज्योतियाँ जलाते हैं। आज कहीं भी देखो, सर्वत्र अन्याय, भ्रष्टाचार, ईर्ष्या-द्वेष, झूठी स्फर्धा बढकर मानवता का नाश होता दिखाई दे रहा है। ''बुराई'' अंधकार का प्रतीक है तो ''अच्छाई'' प्रकाश का सूचक है; ऐसा विश्वास करने का संप्रदाय हमारा है। जीवन में घटित होने वाली मुसीबतें, बीमारियाँ आदि को ''नरक'' मान लें तो, उन पीडाओं से विमुक्त करके सुख-सन्तोष प्रदान करने ''यम'' की प्रार्थना करने के दिन के रूप में इसने प्रचुरता प्राप्त की। कहते हैं कि प्राचीन काल में यक्ष, दीपावली के दिन हर्ष व उल्लास के साथ ''कौमुदी'' उत्सव मनाया करते थे। इसलिए इस त्योहार को ''शुभरात्रि'' कहते हैं। ऐसा ज्योतिष, धर्म शास्त्रज्ञ बताते हैं। सहस्रों वर्षों से यह त्योहार मनाया जा रहा है। इसके लिए अनेकों निदर्शन मिलते हैं। पद्म, वामन पुराणों में इसकी प्रस्तावना है।

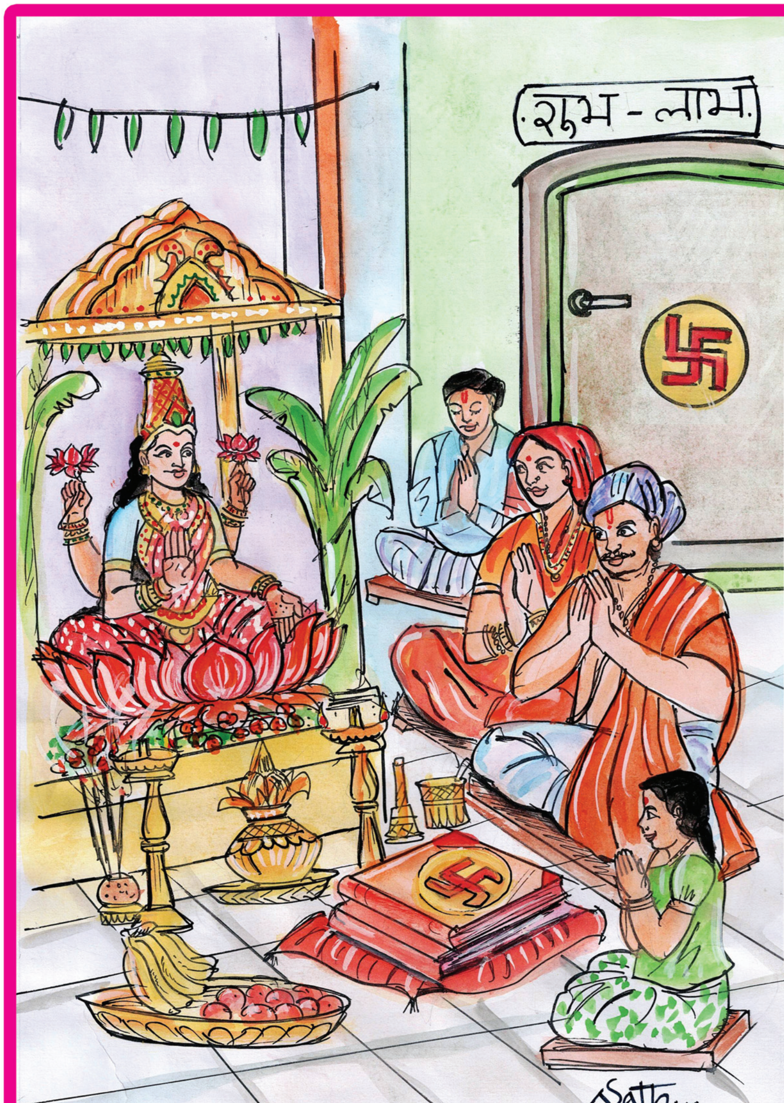


श्रीहरि ने ''आदिवराह'' के रूप में अवतरित होकर पृथ्वी का उद्धार किया। देवता, मुनि, गंधर्व इत्यादियों ने ''धरणीदेवी'' से पाणिग्रहण करने की प्रार्थना उनसे की। उन दोनों को एक दुर्मुहूर्त के समय पैदा हुआ

''नरक''। उसने बड़ी तपस्या करके इस विश्वास के साथ कि अपनी माता किसी भी हालत में अपने बच्चों को मार नहीं सकती; अपनी माता के अलावा किसी और के हाथों मरण प्राप्त न होने का वर पाया। उस वर के गर्व से मुनियों, ब्राह्मणों आदि को सताना, गौओं और साधुजनों का वध करना, स्त्रियों के शील (मान-प्राण का) का हरण करना जैसे दुष्कर्म करते ''नरकासुर'' बन गया। इन पीड़ाओं को सहन न कर सकने वाली भूदेवी ने अपने पति श्रीहरि के पास जाकर आर्त ध्वनि से प्रार्थना की। द्वापरयुग में श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लेकर, अवनि के अंश से जन्म जाने वाली ''सत्यभामा'' के हाथों उस नरक का वध कराया। श्रीहरि ने भूभार दूर कर दिया। इस तरह उन्होंने संसार भर में स्त्री-शक्ति का ढिंढोरा पिटवाया। ''नरक चतुर्दशी'' के दिन असुर (नरक) का संहार कराकर लोक-वासियों को दिव्य प्रकाश प्रदान किया। इसलिए अगले दिन याने ''दीपावली'' के दिन दीप-तोरण जलाकर प्रजा ने सत्यभामा-कृष्ण का स्वागत हर्ष व उल्लास के साथ किया। पटाखे जलाये। उसकी याद में आज भी हम त्योहार मना रहे हैं।

त्रेतायुग में श्रीराम ने 'दशहरा' याने ''विजयदशमी'' के दिन रावणासुर का वधकर के सीता-माता के साथ अयोध्या लौट आकर पट्टाभिषिक्त हुए। उस दिन लोगों ने खुशी में दीप जलाकर त्योहार मनाये; पटाखे जलाये। इसी दशहरे के बाद आनेवाली अमावास्या की ''दीपावली-अमावास्या'' कहते हैं। ऐसा ज्ञात होता है।

सम्राट विक्रमार्क सिंहासनारूढ़ होने का दिन भी यही है। कहते हैं कि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन ही पट्टाभिषिक्त हुआ और उसी दिन से विक्रमार्क-शक प्रारंभ हुआ। उत्तर भारत के लोग इस दिन लक्ष्मी-पूजा, बंग देश में काली-पूजा संपन्न करते हैं। दक्षिण भारत में नरक चतुर्दशी और दीपावली मनाते हैं। इसलिए दीपावली के अगले दिन ''केदारगौरीव्रत'' का आचरण करना, परंपरागत रूप से चला आ रहा है। व्यापारी लोग इस दिन लक्ष्मी-देवी की पूजा-अर्चना संपन्न करके नए बही-खाते खोलते हैं। दीपावली के मनाने के पीछे कइयों सामाजिक, वैज्ञानिक विषय छिपे हुए हैं। सनातन काल से हम भगवान की पूजा प्रकाश रूपी देव के रूप में करते आ रहे हैं।

## 'सप्तगिरि' की ओर से दीपावली की शुभकामनाएँ...

भगवान बालाजी का कृपा-कटाक्ष, आशीर्वाद आप और अपने परिवार पर सदा भरपूर रहने के लिए सप्तगिरि की ओर से पाठकों, लेखक-लेखिकाओं और एजेंटों को 'दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएँ'।

- प्रधान संपादक

वर्षा काल में पानी बरसने से जहाँ देखो तहाँ, पानी ही पानी गड्ढों में जमा होकर रहता है। नमी के कारण वातावरण शुष्क नहीं रहता; अनेक प्रकार के रोग-कारक क्रिमियाँ व्याप्त होती हैं। इनके कारण बीमारियाँ फैल जाने की संभावना है। पटाखे जलाने से एक ओर विनोद व मनोविकास प्राप्त होता है तो दूसरी ओर व्याधिकारक क्रिमि-कीटकादि का नाश होता है। दैव रूपी प्रकाश पर मन लगाने पर अज्ञानांधकार दूर होता है; ऐसा आध्यात्मिक विषय बताता है। एकत्व में भिन्नत्व भरे इस भारत के विविध-राज्यों में विभिन्न जातियों के लोग विविध रूपों में बड़े हर्ष व उल्लास के साथ इस त्योहार को मनाते हैं। सिर्फ हिन्दू लोग ही नहीं, बल्कि आसेतु हिमाचल पर्यंत लोग इसका आचरण करते हैं। इस प्रकार इसमें ''राष्ट्रीय-समैक्यता'' छिपी हुई है।

केवल हमारे देश में ही नहीं, बल्कि विविध-देशों में, विविध-पद्धतियों से, विविध नामों से यह त्योहार मनाते हैं। चीन में नई फसल घर आने के संदर्भ में ''नयमे होरा'' नाम से फसल का त्योहार मनाते हैं। तरह-तरह के पकवान तैयार करके घर के छत के ऊपर धर देते हैं। उन्हें खाने के लिए आनेवाले कौओं को फूलों की मालाओं से पीटते हैं। नेपाल के देश में लोग साधारण दिनों में कौओं को हीन-दृष्टि से देखते हैं। किन्तु त्योहार के दिन में तो उनका बडा आदर करते हैं। नेपाली लोग भी कौओं की तरफ फूल-मालाएँ फेंकते हैं। यदि फूल-माला किसी कौए से छुए तो, जिसने फूल माला फेंकी, उसे सालभर शुभ-फल मिलते हैं; ऐसा नेपालियों का विश्वास है। कुत्तों का भी सम्मान करते हैं।

बरमा देश में लोग गौतम बुद्ध की याद में इस त्योहार को ''तंगेजु'' नाम से मनाते हैं। दीप-तोरणों से सजाकर पटाखे जलाते हैं। ब्रिटेन में ''गैफाल्स-डे'', स्वीडन में ''लूसिया-डे'' नाम से तथा कंबोडिया में हमारे दीपों के त्योहार की तरह दीपावली मनाते हैं। थाइलैंड में लकड़ी से छोटी-छोटी नावें बनाकर उनमें दीप, सिक्के रखकर पानी में छोड़ देते हैं। जपान में ''तोरो नागोषि'' नाम से तीन दिन त्योहार मनाते हैं। वियत्नाम, इंडोनेशिया, श्रीलंका, मलेषिया, मारिषस देशों में दीपावली को हमारे ही तरह मनाते हैं। श्रीलंका में इस ''दीपावली'' को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। जिस दिन हम दीपावली मनाते हैं, उसी दिन सुमात्रा, जावा जैसे छोटे द्वीपों में भी त्योहार मनाते हैं।

महाराष्ट्र में गायों को सजाकर शोभायात्रा संपन्न करके आरती उतारते हैं। ऐसा करने से दुष्ट शक्तियाँ हमारे समीप नहीं आती हैं; ऐसा उनका विश्वास है। राजस्थान में स्त्रियाँ इस दिन अपने आभरण चमकने की रीति से साफ करके, बाद में अभ्यंगन स्नान करती हैं। कवियों ने अपनी रचनाओं में इसकी प्राधान्यता का वर्णन खूब किया।

गुजराती-ब्राह्मण लोग, प्रथम सन्तान के जन्म पर दीपों का त्योहार मनाते हैं। दीपावली के दिन कायस्थ-लोग यमधर्मराज तथा चित्रगुप्त की पूजा करते हैं। कुछ लोग विश्वकर्मा की पूजा संपन्न करते हैं। मारवाड़ी लोग 'बही-खाते की पुस्तकों' की पूजा करके अपना व्यापार प्रारंभ करते हैं।

प्रति-नित्य सुबह व सायं समय पूजा-गृह में दीप जलाकर जीवन में प्रकाश भरने की विनती करते देवाधिदेव की पूजा करने का नियम बना लें तो, अवश्य हमारे जीवन निर्मल व नित्य नूतन की भांति बीत जायेंगे। सुख-संपत्तियाँ; दिन दूनी रात चौगणी, उमड पडेंगी।

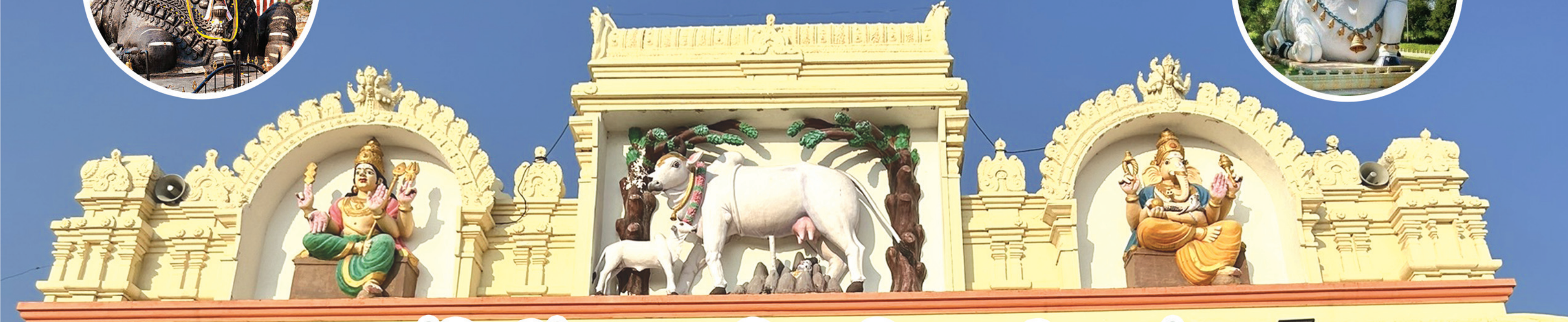

# नव नंदियों का महिमान्वित क्षेत्र नंद्याल

- डॉ आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

दक्षिण भारत के तेलुगु राज्यों में नंदि और नंद्याल ये दोनों शब्द अत्यंत प्रसिद्ध हैं। आंध्र प्रदेश के बीचों बीच उपस्थित 'नंदि मंडल' का केंद्र नंद्याल शहर है। नंद्याल पहले गाँव था। बाद में तालुक स्थान बना। फिर जिला बनकर उस का मुख्य केंद्र बना। नंद्याल पूर्व कर्नूल जिले का प्रसिद्ध शहर है। सुमनोहर जंगलों से चारों तरफ जल के स्रोतों से परिवेष्ठित सुंदर क्षेत्र नंद्याल है। आंध्र प्रदेश के इस प्रसिद्ध शहर का पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व है। क्यों कि यह 'नंदि मंडल' और 'नव नंदियों' के सुंदर मंदिरों से घिरा हुआ महिमान्वित क्षेत्र भी है।

### नंदि मंडल-नंद्याल-महानंदि

तीर्थ यात्री और साधारण यात्री नंद्याल का नाम सुनते ही प्रथम याद करनेवाला शब्द 'महानंदि' है। यह पवित्र शिव क्षेत्र नंद्याल शहर से 18 से 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। नंद्याल शहर और महानंदि के बीच के प्रांत को ही नंदि मंडल कहा जाता है। यह नंदि मंडल भोले शंकर भगवान के लिए अत्यंत प्रिय स्थल है। शिव भगवान यहाँ के नव भिन्न भिन्न प्रदेशों में स्वयंभू बन कर बसे हैं। वह भी अपने प्रिय भक्त और वाहन नंदिकेश्वर की प्रार्थना को स्वीकार करके। नंदि मंडल प्रदेश वह प्रदेश है जहाँ शैवागम या शैव भक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण आराध्य स्थल है। पूरा कथाओं के अनुसार शिव भगवान ने महानंद को यही

पर नंदिकेश्वर बनाकर सदा के लिए अपना वाहन बना लिया है। सर्वकालिक और सर्वदेशिक सदा शिव भगवान के सामने उनके दर्शन और सेवा करते रहनेवाले नंदिकेश्वर का जन्मस्थल यही महानंदि है। पूरा कथा यह स्पष्ट करती है। यह स्थल भी प्रकृति की शोभा से परिपूर्ण और अनंत जल राशियों से समृद्ध 'नलमल' जंगल के आरंभिक गर्भ प्रदेश में स्थित है।

महानंदि के स्थल पुराण से पता चलता है कि प्राचीन काल में इसी नलमल जंगल में शिलाद नामक एक मुनि वास किया करता था। वह इस जंगल में एक कुटीर बनाकर अपनी पत्नी समेत रहा करता था। पति-पत्नी दोनों शिव भक्त थे। परमेश्वर पर भक्ति होने के बावजूद वे निस्संतान थे। शिलाद की पत्नी अपने लिए संतान चाहती थी। उसी ने शिलाद से प्रार्थना की कि वे शिव भगवान से संतान कामी बन कर तप करे। शिलाद ने यह मान लिया। उसने अनेक सालों भर शिव भगवान का कठोर तप किया। एक दिन शिव भगवान प्रत्यक्ष होकर उसे दर्शन दिए। किंतु शिलाद अपनी कामना को भूल गया था। जो मांगना था नहीं मांग पाया। इतना मांगा कि सर्वकालिक और सर्वावस्था में सिर्फ शिव भगवान के दर्शन करते रहने का वरदान मांगा। लेकिन भक्ताधीन भगवान शिव शिलाद और उस की पत्नी की कामना से भली भांति परिचित थे। जहाँ शिलाद ने तप किया था। वहाँ एक भारी सुरंग था। उस सुरंग में शिव भगवान के अनुग्रह से एक बालक का उदय हुआ। शिव भगवान के अंतर्धान होने के बाद शिलाद ने उस बालक को देखा। बडी प्रसन्नता के साथ बिना मांगे मिले उस बालक को अपने पुत्र के रूप में स्वीकार करके अपनी पत्नी को दिया। उस का नाम महानंद रखा गया। घर में ही उसे वेद और उपनिषदों की विद्या प्राप्त हुई। महानंद अपने घर के वातावरण के अनुसार शिव भगवान के महाभक्त बना। शिव भगवान के लिए समर्पित महानंद ने एक दिन शिव भगवान को लेकर तप करने के लिए अपने माता-पिता से अनुमति मांगी। शिलाद और उस की पत्नी ने बड़े हर्ष के साथ अपने पुत्र को अनुमति दी। महानंद ने उसी बिल के समीप ही शिव भगवान को लेकर कठोर तप किया, जहाँ से वह शिलाद को प्राप्त हुआ था। उस के तप से शिव भगवान प्रसन्न हुए। साक्षात हुए। महानंद ने वर मांगा कि वह सदा उसी के समीप रहना चाहता है। शिव भगवान उसे ऐसा वर दिया। साथ ही उस बिल से सदा पवित्र जल प्रवाहित होने का वर भी दिया। यही आज रुद्र कुंड (पुष्करिणी) का मूल जल स्रोत बना हुआ है। शिव भगवान ने महानंद को सदा अपने समीप रहते हुए अपनी सेवा करने का सौभाग्य दे दिया। इस रूप में महानंद शिव भगवान का सेवक और वाहन बना। बाद में शिव भगवान उसे नंदिकेश्वर बनाकर कैलास ले गए। अपने पास ही रख लिया। महानंद की प्रार्थना यह भी थी कि अपने माता-पिता के आनंद के लिए शिव भगवान उस प्रदेश में सदा के लिए वास करे। नंदिकेश्वर की प्रार्थना पर शिव भगवान इस 'नंदि मंडल' के नौ प्रदेशों में स्वयंभू बन कर बसने का आश्वासन दिया। वे ही आज के 'नंदि मंडल' में स्थित नौ शिव मंदिर और उन मंदिरों में स्थित नव नंदि अर्चारूप हैं।

नंदियों का आलय, इस व्युत्पत्तिमूलक शब्दों से ही नंद्याल शब्द निष्पन्न हुआ है। नवनंदियों के आलयों का पवित्र प्रदेश नंद्याल है।

महानंदि मंदिर के शिव लिंग की एक विशेषता है। उस शिव लिंग गो पाद मुद्रांकित बिल है। महानंदि के मंदिर के मुख्यालय का शिव लिंग गो पाद के पादघात से बिखरा हुआ दर्शन देता है। आज भी महानंदि के मंदिर में शिव लिंग को इसी रूप में देख सकते हैं। साथ ही

गंगा भवानी की दया से उस शिव लिंग से अनंत जल राशि के प्रवाहित होने को देख सकते हैं। यह भी मान्यता है कि गंगा माई शिव के दर्शन के लिए साल में एक बार यहाँ पर चले आती है। खास कर वैशाख मास में यहाँ पर आती है। तब से यहाँ पर एक परंपरा बनी है कि वैशाख मास में गंगा माई के आगमन पर यहाँ की पुष्करिणी में गंगा आरती दी जाती है। भक्तगणों का विश्वास है कि उस दिन यहा की पुष्करिणी में स्नान करने से गंगास्नान के समान पुण्य प्राप्त होता है। गंगा माई का यह त्योहार महानंदि में हर साल वैशाख मास में धूम धाम से मनाया जाता है।

शंकर भगवान को यह प्रदेश इसलिए भी पसंद है कि यहाँ पर समय समय पर अनेक देवता-मुनिगण ने तप किया और शिव भगवान के अनुग्रह को प्राप्त किया। उन में ब्रह्म, सूर्य, चंद्र और नाग आदि शामिल हैं। उन के नाम से यहाँ पर नव नंदियों में मंदिर बसे हुए हैं। इस रूप में यह नंदि मंडल, नंद्याल और महानंदि शिवाराधना का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल बन पडा है। इस के अतिरिक्त नंद्याल शहर में भी अनगिनत शिव मंदिर हैं।

महानंदि में गो पाद मुद्रांकित शिव लिंग से संबंधित एक और पुरानि कथा प्रचलित है। प्राचीन काल में नंद्याल प्रदेश पर जिसे नंदि मंडल राज्य के नाम से चंद्र वंशी राजा पांडवों के वंशज उत्तुंग भोज का पुत्र नंदन महाराज ने शासन किया था। यह नंदन महाराज अत्यंत चरित्रवान प्रजा को अपनी संतान के रूप में देखभाल करनेवाला राजा था। उन के शासन काल में प्रजा काफी सुखी थी। प्रजा किसी भी बात की चिंता नहीं करती थी। राजा के पास विशाल गोशाला थी। उस में हजारों गायों की रहा करती थीं। राजा नंदन मूलतः शिव भक्त थे। नित्य शिव लिंग के अभिषेक किए बिना उस का दिन नहीं कटता था। शिव लिंग के अभिषेक के लिए उसने अपनी गो शाला के एक कपिल गाय को चुना था। उस कपिल गाय के दूध से ही वह नित्य शिव लिंग का अभिषेक करता था। वह कपिल गाय में महान थीं। सुंदर और विशाल शरीरवाली थी। उस का थन भी काफी विशाल था। रोजाना वह बडी मात्रा में दूध दिया करती थी। वह दूध भी अमृत जैसा ही था। राजा ने उस के दूध से ही प्रसन्न होकर शिव लिंग के अभिषेक के लिए उसी कपिल गाय को ही चुन लिया था। साथ ही रोजाना उस के दूध को दुहकर शिव के अभिषेक के लिए समय पर राज महल पहुँचाने के लिए गोपाल नामक एक गोप को भी नियुक्त किया था। वह गोपाल गोपिता वरम नामक गाँव का एक युवक था। वह बडे प्रेम और भक्ति के साथ यह दूध पहुँचाने का कार्य किया करता था। राजा को दूध पहुँचाने के बाद वह नित्य गायों को नलमल जंगलों में ले जाकर चराया करता था। जंगल प्रदेश में गाय अच्छी तरह चरती थीं। मुँह मांगे दूध देती थी। किंतु एक दिन गोपाल ने देखा कि कपिल गाय के थन सूना है। उस में कोई दूध नहीं है। दुहने पर अपने बछडे के साथ साथ गोपाल को भी उसने लात मारी। गोपाल को दुःख हुआ। किसी भी रूप में राजा को वह समझा नहीं सकता था। ऐसा क्यों हो रहा है। कपिल गाय का दूध कहाँ जा रहा है। दूसरा और तीसरा दिन भी ऐसा ही हुआ। तब गोपाल का संकट और बढ गया। वह जानना चाहता था कि इस के पीछे का रहस्य क्या है? कपिल गाय का थन क्यों रोजाना सूना सूना हो रहा है। एक दिन घात लगाकर उसने देखा कि कपिल गाय बाकी गायों की झुंड में अलग होकर एक बांबी के पास जाकर दूध देने लगी थी। यह कथा कुछ कुछ श्री वेंकटेश्वर के ईमली-पेड के नीचे बिल में रहते समय रुद्र ब्रह्म के द्वारा पोषण करने की कथा को याद दिलाती है।

रोजाना गाय के उस प्रदेश में जाकर इस रूप में दूध देने के रहस्य को उस गोपक गोपाल ने पहचान लिया। वह क्यों ऐसा करती है, यह जानने की आसक्ति उस में बढ गयी। उस की जांच करने की इच्छा भी हुई। एक दिन वह गाय के उस बांबी के पास जाते देख कर झुरमुट पीछे छिप कर उस ने सब कुछ देख लिया। गाय के दूध गिराते समय बांबी में से एक बालक उस दूध को पिया करता था। इस अद्भुत को उसने देखा। दूध देने के बाद वह गाय फिर से साधारण होकर झुंड में आकर मिल जाती थी। इस अद्‌भुत कार्य को उस गोपाल ने अपने मित्रों को बताया। इधर राजा नंदन शिव भगवान के अभिषेक के लिए दूध के न मिलने से कुपित हुआ। उस ने गोपाल को बुलाकर डाँट फटकार करके कारण के बारे में पूछा। तब गोपाल ने राजा को यह पूरी कहानी बतायी कि रोजाना कपिल गाय बांबी के पास जाकर बांबी में रहनेवाले बालक को दूध पिला रही है।

नंदन राजा में भी जिज्ञासा बढ गयी कि गाय इस रूप में किसे दूध दे रही है। स्वयं इस की जांच करना चाहा। एक दिन अपने सिपाहियों के साथ राजा नंदन ने उस बांबी के पास घात लगाकर छिप कर देखना शुरू किया। गाय रोजाना की तरह आकर बांबी के पास खडी हो गयी। उस के थन से दूध अपने आप बांबी में गिरने लगा। बांबी के अंदर के बालक उस दूध को पीने लगा। राजा ने उस बालक के चेहरे को भी देख लिया। और भी उस के नजदीक जाकर देखने का प्रयत्न किया। इस प्रयत्न में गाय डर गयी। उस भाग में कपिल गाय उस बांबी पर अपने पाद से घात करके दौड कर चली गयी। जिससे गो पाद की मुद्रा उस बांबी पर अंकित हो गयी। बालक तो अदृश्य हो गया।

उस दिन रात को राजा नंदन ने सपने में शिव भगवान के दर्शन किए। शिव भगवान ने राजा से कहा कि तुम धन्य हो गए हो। तुम्हारा राज्य भी धन्य हो गया। इसलिए कि कपिल गाय के दूध को पीनेवाला और कोई नहीं बल्कि मैं हूँ। अब तुम्हारे राज्य में किसी चीज की कमी नहीं होगी। सर्वथा समृद्ध होगा। तुम्हारे इस अभिषेक के संकल्प से मैं संतुष्ट हो गया। शिव भगवान ने राजा को आदेश दिया कि जिस बिल में रहते हुए मैं दूध पिया करता था वहाँ पर मेरे लिए एक मंदिर बनाओ। साथ ही उस प्रदेश में नौ जगहों पर मेरे लिए मंदिरों का निर्माण कराओ। मेरे आशीर्वाद तुम को तथा तुम्हारे राज्य को प्राप्त होगा। मेरे लिए यह प्रदेश भी प्रिय है। मैं यहीं पर बसना चाहता हूँ। मेरे साथ गंगा भवानी भी यहीं रहेंगी। उसी बांबी और बिल के पास ही नंदन राजा ने महानंदि मंदिर का निर्माण करवाया। साथ ही रुद्र कुंड, विष्णु कुंड और ब्रह्म कुंड नामों से तीन तालाबों या पुष्करिणियों का निर्माण करवाया। नंदन महाराज के बाद चालुक्य वंशज के राजाओं ने और बाद में विजयनगर राजाओं ने इन मंदिरों की देखभाल के साथ साथ नए नए निर्माण करवाये। नंदन राजा के द्वारा प्रतिस्थापित होने के कारण इसे महानंदि कहा गया है। महानंदि में आज भी शिव लिंग गोपाद मुद्रांकित और बिखरा हुआ पाया जाता है। यह बहुत बडा साक्ष्य प्रमाण है।

इन स्थल पुराणों से स्पष्ट होता है कि यह प्रदेश शिव भगवान के लिए अत्यंत प्रीतिकर प्रदेश है। गंगा माई भी यहाँ पर शिव भगवान के दर्शन के लिए पधारती है। सुरम्य प्रकृति के गर्भ में स्थित होने के कारण प्रकृति प्रेमी भी यहाँ पर बडी संख्या में पधारते हैं।

## महानंदि की पुष्करिणियाँ

नंदन राजा के काल से ही इन पुष्करिणियों के होने का इतिहास प्राप्त होता है। इन पुष्करिणियों की सब से बडी विशेषता यह है कि इन पुष्करिणियों का जल अत्यंत स्वच्छ, स्पटिक और पारदर्शी होता है। छोटी सी सूई भी नीचे डाल कर उसे ऊपर से देख कर पुनः उसे

प्राप्त किया जा सकता है। साल भर में एक ही गति से प्रवाहित होनेवाले जल को देखकर आश्चर्य होता है। इन पुष्करिणियों में अनगिनत जल स्रोत है। मुख्य स्रोत तो स्वयंभू शिव लिंग के निचले भाग से माना जाता है। भारत में शायद ही और कहीं ऐसी पुष्करिणियों को देखा जा सकता है। मुख्य पुष्करिणी रुद्र कुंड के बीचों बीच एक शिला मंडप बना हुआ है। उस में पंच भूतों के प्रतीकों के रूप में पांच शिव लिंगों की स्थापना की गयी है। जो पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि के प्रतीक माने जाते हैं।

भगवान शिव का आवास स्थान तो कैलास है। जिस रूप में कैलास के अधिपति का प्रिय स्थल काशी है वैसे ही दक्षिण भारत में उन के लिए अत्यंत प्रिय और महत्वपूर्ण स्थल यह 'नंदि मंडल', नद्याल और नव नंदियों का प्रदेश है।

## नव नंदियों के नव शिव मंदिर

नंद्याल शहर के मुख्य केंद्र के साथ साथ उस के दस-अठारह किलोमीटर की परिधि पर महिमान्वित ये नव नंदि क्षेत्र बसे हुए हैं। वे क्रमशः 1. प्रथम नंदि, 2. नाग नंदि, 3. सोम नंदि, 4. शिव नंदि, 5. कृष्ण नंदि व विष्णु नंदि, 6. महा नंदि, 7. विनायक नंदि, 8. गरुड़ नंदि, 9. सूर्य नंदि। इन में प्रथम तीन नंद्याल शहर में ही स्थित हैं। शिवनंदि, सूर्य नंदि पास के गाँवों में स्थित हैं। उसी प्रकार महानंदि, विनायक नंदि और गरुड़ नंदि महानंदि के परिसरों में ही स्थित है। कृष्ण नंदि अलग से घने जंगल में बसा हुआ है। जो महानंदि से लगभग पांच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

### 1. प्रथम नंदि :

यह मंदिर नंद्याल शहर की आग्नेय दिशा में है। प्रथम का मतलब पहला और मुख्य दोनों अर्थ होते हैं। यह नंद्याल शहर में बस के अड्डे से एक किलोमीटर की दूरी पर चाम कालुव नामक प्रदेश में स्थित है। पूरा कथा के अनुसार इस प्रदेश में ब्रह्म ने शिव को लेकर तप किया था। ब्रह्म के तप से प्रसन्न होकर शिव भगवान नंदिकेश्वर पर आरूढ़ होकर उन्हें दर्शन दिए थे। ब्रह्म की मांग के अनुसार यहाँ पर शिव प्रथम नंदीश्वर के रूप में बसे हैं। इस मंदिर में स्थित शिव लिंग का दूसरा नाम श्री नंदीश्वर लिंग है। शिव की पत्नी पार्वती देवी यहाँ पर केदारेश्वरी देवी के रूप में बसी है। कार्तिक मास में सूर्यास्त के समय सूर्य की किरणें इस शिव लिंग को स्पर्श करती हैं। सारे मास शिवरात्रि के दिन, महाशिवरात्रि के दिन यहाँ पर विशेष कार्यक्रम किए जाते हैं। महाशिवरात्रि के दौरान यहाँ पर बैलों की प्रतियोगिताएँ की जाती हैं। इस मंदिर के बगल में ही चाम कालुव नाम से एक नाला बहता है। वह आगे जाकर कुंदू नदी में विलय होता है। प्रथमनंदीश्वर भक्तों की मनौतियों को पूरा करनेवाले महिमान्वित भगवान के रूप में प्रचलित हैं।

क्रमशः

**अगस्त-2025 महीने का क्विज-37 के समाधान**

1) तुलसी, 2) सीता और लक्ष्मण,

3) रावणासुर, 4) 1480,

5) श्रीकृष्ण, 6) श्रीकृष्ण,

7) भगवान वराह, 8) हयग्रीव अवतार,

9) भगवान शिव, 10) सांदीपनी,

11) भगवान शिव, 12) गणेश महराज,

13) गोकर्ण, 14) Rutaceae,

15) Citrus limon.

# रहस्य शिव के स्वरूप का

- डॉ.विजयप्रकाश त्रिपाठी

देवताओं और राक्षसों के द्वारा सागर-मन्थन की पौराणिक कथा लगभग सभी लोग जानते हैं। इस मन्थन से जो चौदह दुर्लभ रत्न उत्पन्न हुए, उनमें विष भी था। सबके कल्याण के उद्देश्य से, सृष्टि की रक्षा हेतु शिवजी ने इस हलाहल-पान को स्वीकार कर लिया। इसे पचाने की शक्ति भी इन्हीं में थी। इसी कारण वे 'मृत्युंजय' कहे गए। वैसे सभी देवता अमर हैं, परन्तु 'मृत्युंजय' शिव ही हैं। जब देवताओं ने विषपान हेतु उनसे प्रार्थना की, तो उन्होंने कहा, ''यह कोई बड़ा कार्य नहीं है। बड़ा कार्य तो विश्व में भरे हुए विष को पचा सकना है। जो यह कार्य करे, वह सबसे बड़ा पुरुषार्थी है।''

वैसे इस कथा का कोई ठोस आधार नहीं है। परन्तु इसमें सृष्टि के किन्हीं रहस्यों का संयोजन है। मानव-शरीर में स्थित मन एक अथाह सागर है, जिसमें हर प्रकार का मन्थन होता है। अमृत और विष उत्पन्न होते हैं। उस विष को अमृत में परिवर्तित करने वाला, हमारी रक्षा करने वाला शिव का अधिपति शिव, जल का वरुण है। तेज जीवनदाता है और प्राण नाशक है। सारे शरीर में धमनियों और शिराओं का जाल विछा है। शुद्ध काला रक्त धमनियों में और अशुद्ध नीला रक्त नसों में बहता रहता है।

इन दोनों की स्थिति ठीक विपरीत है। प्राण वायु लेकर रक्त पोषण करता है तो नीला रक्त सारे शरीर का विष समेटे हृदय की ओर जाता है। विष और अमृत का यह द्वन्द्व हमारे शरीर में प्रतिक्षण व्याप्त रहता है। जब तक इस शरीर में सन्तुलन है तभी तक यह जीवन है।

शरीर की शिवात्मक प्राणाग्नि इस विष का पान करती रहती है। उसमें बैठी दैवी शक्तियाँ और इन्द्रियाँ पोषित होती रहती हैं। अतः सृष्टि के पशु-पक्षी और वनस्पति का यह शक्ति पोषण दायित्व निभाती है। शरीर का प्राणवायु अमृत है। अपानवायु विष है। सभी प्रकार के विष, मन, प्राण और शरीर के धरातलों पर उपजा

करते हैं। इनको समाप्त करने वाली अग्नि को वेदों की भाषा में 'वैश्वानर' कहा गया है। सूर्यदेव के रूप में विराट् वैश्वानर से समस्त सृष्टि शक्ति प्राप्त करती है।

लेकिन इस सूर्य में भी अमृत और विष के तत्त्व विद्यमान हैं। इसके पुण्य प्रकाश से अमृत और ताप से मृत्यु का जन्म होता है। पोषण एवं विनाश सर्वत्र व्याप्त है। इन दोनों के सामंजस्य

से उत्पन्न सतरंगी पट्टी, जिसे हम इन्द्रधनुष की संज्ञा देते हैं। यही शिव का स्वरूप है। इसी धनुष के भुके हुए भाग को 'नील' और पिछले भाग को 'लोहित' कहते हैं।

शिव का कन्ठ विष के कारण नीला हैं और शरीर लाल। यह कन्ठ ही आकाश है, यहीं से शब्द का जन्म हुआ है। शेष सम्पूर्ण जगत् उन्हीं का शरीर है। विश्व का सम्पूर्ण विषरूपी मल इसी आकाश में विलीन हो जाता है। लेकिन आकाश वैसा ही बना रहता है। 'मृत्यंजय' शिव का यही स्वरूप है। वेद में आकाश को ब्रह्म की संज्ञा दी गई है। वह मात्र शद्व से ही जानी जा सकती है। ब्रह्म विश्व द्वारा व्यक्त होता है।

योगशास्त्र का मत है कि शरीर में, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु तथा अग्नि के पाँच तत्त्व विद्यमान हैं। तत्त्वों (चक्रों) के केन्द्र रीढ़ की हड्डी से निर्मित हैं। पाँचवा तत्त्व आकाश जो सबके ऊपर है। इसके नीचे चार चक्र है।

हृदय में स्थित अनाहत-चक्र वायु तत्त्व से सम्बन्धित है। पेट में अग्नि के रूप में स्थित मणिपूरक चक्र स्थित है। इसके नीचे स्वाधिष्ठान-चक्र, जल तत्त्व से जुड़ा है जो प्रजानन का कार्य करता है।

सबसे नीचे भाग में मूलाधार चक्र है जिसकी अधिष्ठात्री यह पृथ्वी है, इससे विसर्जन का कार्य होता है। यही चारों चक्र शरीर की गन्दगी को बाहर फेंक देते हैं। लेकिन कन्ठचक्र पर इसका कोई असर नहीं होता।

इसी कन्ठ से उत्पन्न स्थूल शब्दों का सम्बन्ध शरीर के निचले भाग नाभि आदि से होता है परन्तु सूक्ष्म शब्द मन से जुड़े होते हैं। चिन्तन का सम्बन्ध मन और मस्तिष्क से है। मस्तिष्क में एक सहस्त्रदल कमल की रचना विद्यमान है इसी कमल में शिव का निवास है। अतः एवं शरीर में स्थित शिव के स्वरूप को पहचानना बहुत कठिन है।

# नागुल चविति

- डॉ एच एन गौरीराव

सनातन धर्म में सिर्फ देवी देवताओं को ही नहीं, पशु पक्षियों को भी भगवान का स्वरूप मानकर पूजा की जाती है। सांप को नाग देवता मानकर पूजा की जाती है। नाग देवता से संबंधित त्योहार नागुल चविति है। यह त्योहार दक्षिण भारत में खासकर आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटका में मानाया जाता है। नागुल चविति को हर साल कार्तिक शुक्ल चतुर्थी के दिन आचरण किया जाता है। यह त्योहार प्रमुखतया महिलाओं से आचरण किया जाता है। इस दिन, भक्त लोग नाग देवताओं को पूजते हैं और उनसे आशीर्वाद मांगते हैं।

## नाग पूजा का आरंभ और इतिहास

भारत में नाग पूजा की परंपरा प्रथमतः प्रारंभिक मानव द्वारा आरंभ हुई। सांपों के विष के भय से, तथा पुरानी त्वचा को त्यागकर अपने शरीर को नया बना लेने की शक्ति को देखकर उनके प्रति श्रद्धाभाव से, तथा सांप भूमि को उर्वरा बनाना, फसल को चूहों से बचाने की शक्ति आदि गुणों से प्रभावित होकर उनके प्रति कृतज्ञता भाव से मनुष्य ने साँपों को भगवान का स्वरूप माना।

सिंधु घाटी सभ्यता के पुरातत्व साक्ष्य जैसे - सर्प के आकार की कलाकृतियाँ, मुहरों पर नागों की आकृतियाँ आदि प्रमाणित करते हैं कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में नाग पूजा की जाती थी। रामायण, महाभारत तथा विविध पुराणों में नाग पूजा के उल्लेख मिलते हैं। भारत में नाग पूजा की परंपरा हिमालय से लेकर दक्षिण तक व्याप्त है।

## सांस्कृतिक मान्यताएँ

पुराणों में नाग देवता को विभिन्न देवताओं से जोड़ा गया है। भगवान शिव नाग को अपने कंठ में लपेटते है तो भगवान विष्णु आदिशेष पर शयन करते हैं। भगवान गणेश नाग को अपने पेट के चारों ओर बांधा हैं। भगवान कुमारस्वामी (कार्तिकेय) को नाग देवता के रूप में पूजा की जाती है। इनसे संबंधित कुछ पौराणिक कहानियाँ भी प्रचलन में है।

पौराणिक कथाओं में समुद्र मंथन एक प्रमुख घटना है, जिसमें देवताओं और असुरों ने अमृत को प्राप्त करने के लिए क्षीरसागर का मंथन किया था। इस कार्य में मेरु पर्वत मथनी के रूप में और वासुकी नाग रस्सी के रूप में अपना योगदान दिया था। पुराणों के अनुसार वासुकी

नाग विशालकाय सांप माना जाता हैं। इस मंथन के दौरान हानिकारक विष निकला, जिसको महाशिव ने पी लिया और इससे वे विषकंठ कहलाए। वासुकी नाग के बिना समुद्र मंथन असंभव था। समुद्र मंथन के बाद वासुकी के कार्य से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें अपने गले में आभूषण के रूप में धारण किया। वासुकी नागों के राजा हैं और भगवान शिव के परम भक्त माने जाते हैं। भगवान वासुकी आध्यात्मिक शक्ति और नियंत्रण का प्रतीक है। महाभारत में एक प्रसंग है कि द्वेष भावना से दुर्योधन ने भीम के भोजन में विष मिलाकर खिलाया, जिस कारण से भीम अचेल हो गए। अचेत भीम को उन्होंने नदी में फेंक दिया। तब वासुकी नाग ने भीम को नागलोक ले जाकर उपचार करके उनके प्राणों को बचाया।

शेषशाई नाग को वासुकी नाग का भाई माना जाता है। अनंत, आदिशेष आदि नामों से प्रसिद्ध शेषनाग एक हजार फणवाला सर्प माना जाता है। वे भगवान विष्णु का परम भक्त है और इन्हीं पर श्रीहरि शयन करते है। पुराणों में कहा गया है कि वे पृथ्वी के भार को अपने फण पर धारण करते है। हर युग में धर्म की रक्षा के लिए भगवान विष्णु के साथ शेषशाई का भी अवतार हुआ है। वे त्रेतायुग में राम के भाई लक्ष्मण के रूप में, तथा द्वापरयुग में श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के रूप में जन्म लिए हैं। धर्म की रक्षा के बाद अपना अवतार त्यागकर शेषनाग फिर वैकुंठ पहुँचते हैं और भगवान विष्णु की सेवा में निरत हो जाते हैं।

गणेश जी अपने पेट के चारों ओर सांप को लपेटे हुए दिखाई देते हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार गणेश जी मोदकों को ज्यादा खाकर फटे हुए अपने पेट को ठीक करने के लिए एक सांप को अपने पेट पर बांध लिया।

नाग देवता का संबंध योग से भी है। योग में, कुंडलिनी को नाग का प्रतीक माना जाता है। यह कुंडलिनी रीढ़ की हड्डी के मूल में स्रोते हुए सांप जैसा रहती है। यह सतत ध्यान और साधना से जागृत होती है और शरीर के विभिन्न चक्रों को सक्रिय करते हुए सहस्त्रधारा चक्र की ओर चढती है। जब कुंडलिनी जागृत होती है तब व्यक्ति में अनेक सकारात्मक परिवर्तन होते हैं और आध्यात्मिक उन्नति होती है।

## नागुल चविति का अनुष्ठान

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि के दिन श्रद्धालु सुबह उठकर स्नानादि करके भक्ति से नाग देवता की पूजा करते हैं। पूजा पद्धतियाँ भिन्न क्षेत्रों के अनुसार कुछ परिवर्तन होते हैं। इस दिन सुबह से महिलाएँ उपवास रहकर सांप के बिल (तेलुगु, भाषा में 'पुट्टा' कहते हैं।) के पास जाकर उस बिल को कुंकुम और हल्दी से पूजा करके बिल में और उसके चारों ओर दूध को डालती हैं। फिर फूल से पूजा करती है। नैवेद्यम के लिए तिल और गुड़ को बराबर मात्रा में मिलाकर बनाए गए तिल के लड्डू (तेलुगु में नुव्वुला वुंडा या चिम्मिलि

कहते है) को, चावल का आटा और गुड़ को मिलाकर तैयार किया गया सांप्रदायिक खाद्य चलिमिडि को तथा भीगी हुई पीली मूंग दाल से बनाया गया व्यंजन (वडपप्पू) को और केले को समर्पित करती है, अंत में धूप चढाके आरती उतारती है, आत्म प्रदक्षिण नमस्कार करके अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करती है। सांप बिल के चारों ओर तीन बार प्रदक्षिण करके सर्प बिल की मिट्टी को कानों पर लगाती है। इससे कान से संबंधित समस्याएँ दूर हो जाती हैं। स्त्रियाँ पूरा दिन उपवास रहकर अंत में पूजा के रूप में समर्पित पदार्थों को स्वीकार करती है। इस दिन पकाए गए भोजन नहीं खाना चाहिए। कुछ लोग नाग प्रतिमा को, जो मंदिरों के बाहर अश्वत्थ वृक्ष के नीचे प्रतिष्ठित होते हैं, दूध से अभिषेक करके पूजा करती है। कुछ स्त्रियाँ घर पर ही नाग देवता की मूर्ति की पूजा करती है।

इस दिन को सुब्रह्मण्य स्वामी या कार्तिकेय के मंदिरों में भगवान को दूध से अभिषेक किया जाता है और विशेष रूप से मंदिरों को तथा भगवान को अलंकृत करके पूजा की जाती है। भक्त भी उत्साह के साथ भगवान का दर्शन करके प्रणाम करने मंदिर आते हैं। श्रद्धालुओं की भक्ति और विश्वास से नाग देवता प्रसन्न होकर वांछित फल देते है। इस दिन नाग देवता से संबंधित मंत्रों का जप किया जाता है।

नव नाग स्तोत्रम्, नाग देवता का एक शक्तिशाली मंत्र है।

### नव नाग स्तोत्र

*''अनंतं वसुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।*
*शंखपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा।।*
*एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।*
*सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः।।*
*तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।।''*

इस मंत्र का जप करने से व्यक्ति सभी कठिन परिस्थितियों से बचता है और जीवन में विजयी होता है।

ज्योतिष के अनुसार, राहु और केतु को सर्प का प्रतीक माना जाता है। नाग चतुर्थी पर नाग देवता की पूजा के साथ राहु और केतु की पूजा करने से जन्म कुंडली पर उनके नकारात्मक प्रभाव कम हो सकते है और

कालसर्प दोष भी दूर हो जाता है। इतना ही नहीं नाग देवता की पूजा करने से पूर्वजों से प्राप्त सर्प शाप का प्रभाव नष्ट हो जाता है। हमारे घर में शांति और समृद्धि बढ़ती है। शांति से मानसिक समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

अविवाहित महिलाएँ विवाह के लिए तथा विवाहित महिलाएँ संतान की दीर्घायु और कल्याण के लिए नागुल चविति व्रत रखती है। जिन महिलाओं को संतान नहीं है वे सुसंतान के लिए इस व्रत का आचरण करती है।

### नागुल चविति के वैज्ञानिकता

हमारे हिंदू धर्म में सब त्योहारों के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक कारण छिपा रहता है, जो समय के साथ रीति रिवाजों और परंपराओं के रूप में देखने को

मिलता है। नागुल चविति के आचरण से जिन स्त्रियों को संतान नहीं है उनको पूरा दिन उपवास रखने से शरीर में जो भी विषाणु होते हैं वो दूर हो जाते है, जिससे शारीरिक, मानसिक लाभ होते हैं। उपवास के बाद तिल का लड्डू और चलिमिडि खाने से स्त्रियों के संतान से संबंधित बाधाएँ दूर हो जाती हैं। तिल, चावल और गुड़ में मौजूद ऊर्जा प्रदान करने वाले पोषक तत्व गर्भावस्था के समय माँ और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य के लिए सहायक होते हैं। कच्चे दाल खाने से शरीर को प्रोटीन मिलता है।

सांप खेतों में चूहों को खाकर हमारी फसलों की रक्षा करते है। इस कारण से सांप 'किसान का मित्र' कहा जाता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार नागों को जल से जोड़ा जाता है। वे कृषि भूमि की उर्वरता को बनाए रखता है। इस रूप से सांप पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपने आहार को ढूंढते हुए जब सांप बिल से बाहर आ जाते हैं, तो हम डर के मारे उनको हानि पहुँचाते हैं। सांपों की रक्षा करके प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए सांपों को भगवान का रूप मानकर पूजा की जाती है। सनातन धर्म में सब प्राणियों को भगवान का रूप माना जाता है। नागुल चविति नाग देवता की पूजा के लिए एक शुभ दिन माना जाता है।

## नागुल चविति का महत्व

नागुल चविति के आचरण को भक्ति और निष्ठा से करने से नाग देवता प्रसन्न होते हैं। फलतः हम सब प्रकार के दोषों से मुक्त हो जाते हैं। परिवार का कल्याण, समृद्धि और धन-संपत्ति प्राप्त करने के अलावा शांति के साथ जीवन बिता सकते हैं। इतना ही नहीं यह त्योहार प्रकृति, जीव-जंतु और मनुष्य के बीच सामंजस्य को स्थापित करता है।

## तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

**स्वामिपुष्करिणी :** मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

**आकाश गंगा :** मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**पापविनाशनम् :** मंदिर की उत्तरी दिशा में 5 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**वैकुंठ तीर्थ :** मंदिर की ईशान दिशा में लगभग 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**तुम्बुरु तीर्थ :** मंदिर की उत्तरी दिशा में 16 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) :** यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में 1 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

**ति.ति.दे. बगीचे :** देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

**आस्थान मंडप (सदस हाल) :** यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

**श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) :** इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

**ध्यान केंद्र :** तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

# तुलसी माहात्म्यम

- डॉ.जी.सुजाता

हमारे सनातन हैंदव सांप्रदाय में तुलसी पौधे का विशिष्ट स्थान है। उनका पूजा करना या देखना शुभ ही माना जाता है। इसका विशिष्ट गुण निम्न सूचित के अनुसार है-

## तुलसी से कौन सी बीमारियाँ ठीक होती हैं

### 1. सर्दी और जुकाम

तुलसी के पत्तों में एंटीवायरल और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो सर्दी और जुकाम के लक्षणों को कम करने में मदद करते हैं। इसके पत्ते उबालकर उसका काढ़ा पीने से गले की खराश और खांसी में राहत मिलती है।

### 2. मधुमेह

तुलसी की पत्तियों में इंसुलिन जैसे गुण होते हैं जो रक्त में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। यह डायबिटीज के प्रबंधन में सहायक हो सकता है।

### 3. तनाव और चिंता में कमी

तुलसी के सेवन से मानसिक तनाव और चिंता कम होती है। तुलसी में एंटी-स्ट्रेस एजेंट होते हैं जो मस्तिष्क को शांत रखते हैं और दिमाग को तरोताजा महसूस कराते हैं।

### 4. हृदय स्वास्थ्य में सुधार

तुलसी में सूजनरोधी (एंटी-इंफ्लेमेटरी) और प्रतिउपचायक (एंटीऑक्सीडेंट) गुण होते हैं जो हृदय को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं। यह कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में सहायक है, जिससे दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है।

### 5. पाचन में सुधार

तुलसी का सेवन पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है। यह गैस, अपच और पेट में होने वाली अन्य समस्याओं को कम करने में मदद करती है। तुलसी के पत्ते खाने से भूख में सुधार होता है और पेट संबंधी समस्याओं से राहत मिलती है।

### 6. मसूढ़ों और दांतों के स्वास्थ्य में सुधार

तुलसी के एंटी-बैक्टीरियल गुण दांतों और मसूढ़ों को स्वस्थ बनाए रखते हैं। यह दांतों की सड़न और मसूढ़ों की सूजन को कम करने में मदद करती है।

## तुलसी का सेवन कब नहीं करना चाहिए?

तुलसी का सेवन आपकी सेहत के लिए लाभकारी हो सकता है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि इसका सेवन सही तरीके और सही समय पर किया जाए। किसी भी स्वास्थ्य समस्या या दवा के साथ तुलसी का सेवन करने से पहले विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

### गर्भावस्था के दौरान

गर्भवती महिलाओं को तुलसी का अत्यधिक सेवन करने से बचना चाहिए, क्योंकि यह गर्भाशय की संकुचन को उत्तेजित कर सकता है, जिससे गर्भपात का खतरा

बढ़ सकता है। हालांकि, सामान्य मात्रा में तुलसी का सेवन किया जा सकता है।

### थायरॉयड समस्याओं के साथ

तुलसी में थायरॉयड हार्मोन को प्रभावित करने की क्षमता होती है। यदि आप हाइपोथायरॉयडिजम जैसी थायरॉयड समस्याओं से ग्रस्त हैं, तो तुलसी का सेवन अत्यधिक मात्रा में करने से बचना चाहिए।

### चोट या सर्जरी के बाद

चोट या सर्जरी के बाद, रक्तस्राव के जोखिम को कम करने के लिए तुलसी का सेवन सीमित करना चाहिए। तुलसी के एंटीकोआगुलेंट्स रक्तस्राव को बढ़ा सकते हैं, जिससे रिकवरी की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

### आयुर्वेदिक दवाओं के साथ

तुलसी का सेवन कुछ आयुर्वेदिक दवाओं के साथ नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे दवाओं की प्रभावशीलता पर असर पड़ सकता है। अगर आप किसी भी आयुर्वेदिक उपचार का पालन कर रहे हैं, तो तुलसी का सेवन करने से पहले अपने आयुर्वेदिक चिकित्सक से सलाह लें।

### तुलसी का पौधा लगाने के लिए यह महीना होता है उत्तम

हिंदू धर्म में कार्तिक का महीना अत्यंत शुभ माना गया हैं। कार्तिक का महीना भी तुलसी का पौधा घर

लाने या लगाने के लिए सर्वोत्तम माना गया है। मान्यता है कि इस महीने में पूजा करने से व तुलसी पौधा लगाने से सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। कार्तिक के महीने में तुलसी विवाह भी किया जाता है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, तुलसी का पौधा गुरुवार और शुक्रवार के दिन लगाना बेहद शुभ माना जाता है। इसके अलावा यह भी माना जाता है कि चैत्र माह में अगर गुरुवार या शुक्रवार के दिन तुलसी का पौधा लगाया जाए तो, यह साधक को शुभ फल प्रदान करता है। तुलसी का पौधा लगाने के लिए कुछ दिन वर्जित बताए गए हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, तुलसी का पौधा रविवार, बुधवार और सोमवार को नहीं लगाना चाहिए।

### तुलसी को किस दिन नहीं छूना चाहिए

तुलसी को रविवार और एकादशी के दिन छूने की मनाही होती है। हिंदू धर्म की मान्यताओं के एकादशी के दिन भगवान विष्णु के लिए माँ लक्ष्मी व्रत रखती हैं। इस दिन तुलसी छूने से माँ लक्ष्मी का व्रत खंडित हो जाता है।

## नवंबर 2025

**02** कैशिकद्वादशी, क्षीराब्धि द्वादशी

**14** बाल दिवस

**17-25** तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव

**17** श्री धन्वन्तरी जयंती

**21** तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा

**25** पंचमीतीर्थ

**26** तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का पुष्पयाग, सुब्रह्मण्य षष्ठी

# अक्तूबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

**मेष राशि -** संघर्षपूर्ण परिस्थितियों को बावजूद भी सुख-शांति, आरोग्य-आनन्द, दैनन्दिनी व्यवस्थित, राजकीय सहयोग, भ्रातृ सुख, रचनात्मक प्रवृत्ति, अभीष्ट सिद्धि, शत्रु विजय, शक्ति संवर्धन, नौकरी में उल्लास, संतान सुख, उत्तरार्ध प्रगतिशील रहेगा। कार्य-व्यापार में अनुकूलता लाभ मिलेगा। वर्तमान परिस्थितियों में अचानक परिवर्तन आ सकता है।

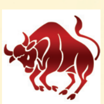

**वृषभ राशि -** व्यावहारिक जीवन में सौमनस्यता से समाधान, आरोग्य सुख, विरोधियों से उलझन, आर्थिक सुख। शुक्र पंचमस्थ नीचराशिगत होने से मानसिक तनाव एवं विद्या में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। कौटुम्बिक उत्तरदायित्यों का निर्वाह, कुछ आर्थिक परेशानियाँ भी बनी रहेंगी। निकट बन्धुओं से तकरार होगी। व्यापार सामान्य रहेगा।

**मिथुन राशि -** बुध पंचम भाव में मंगल के साथ संचार करने से मिश्रित प्रभाव होंगे। शुभ कर्मों में रुचि, निरर्थक उलझनों से बचना चाहिये। आर्थिक स्थिति सुदृढ़, पठन-पाठन में रुचि, आलस्य-प्रमाद से नुकसान सम्भव, व्यापार की चिन्ता रहेगी। कृषि कार्यों में सफलता, व्यापारिक प्रगति। सन्तान या उनके कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। सकारात्मक परिवर्तन होंगे।

**कर्कटक राशि -** पूर्वार्द्ध में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मंगल-शनि का दुष्प्रभाव इस महीने में दिखेगा। तनाव-विवाद, कार्यों में गतिरोध, चित्त अशान्त, संतान पक्ष से परेशानी, कौटुम्बिक दायित्व निर्वहन में कठिनाई, व्यापार सामान्य रहेगा, उत्तरार्ध में ग्रह परिवर्तन सुखद वातावरण देंगे।

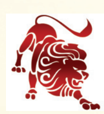

**सिंह राशि -** हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण, व्यावहारिक कुशलता से समस्याओं का समाधान, इष्ट मित्र, स्त्री-सन्तान से प्रसन्नता, आर्थिक मजबूरी, व्यापारिक विस्तार, धर्म-आध्यात्म में रुचि, विद्या में प्रगति, उत्तरार्ध में अपेक्षाओं की पूर्ति। वाहनादि का क्रय-विक्रय भी होगा। उत्तरार्ध में सूर्य-मंगल योग होगा, वैचारिक दृढ़ता किन्तु हठ धर्मिता बढ़ायेगा अतः कार्तिक माहात्म्य का नित्य पाठ करें।

**कन्या राशि -** सूर्य लग्नस्थ तथा बुध-लाभ द्वितीय भावस्थ होने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होंगे। आर्थिक संतुलन किन्तु लेन-देन में सावधानी रखें, आरोग्य सुख, बौद्धिक चेतना का उदय, व्यवस्थित दिनचर्या, रोजी-रोजगार में प्रगति, विशिष्टजनों का सहयोग, नौकरी में उल्लास, शनि की दृष्टि होने के कारण व्यर्थ झगड़ा हो सकता है।

**तुला राशि -** नौकरी पेशों में उन्नति एवं व्यवसाय को बढ़ाने के लिए नई योजनाएँ भी बनेंगी। दुष्प्रवृत्ति अनैतिक कृत्यों की ओर प्रेरित करेंगी। स्वास्थ्य बाधा, आत्मसंयम जरूरी, छात्रों को अनुकूल समय का लाभ उठाना चाहिये। दायित्व वृद्धि, धनागम में बाधा, अपनों के सहयोग से क्लिष्ट कार्यों का समाधान, उद्योग-व्यापार में अनुकूलता रहेगी।

**वृश्चिक राशि -** व्यावसायिक कार्यों में व्यर्थ की उलझनें, आय से अधिक खर्च, दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रता से सफलता, तनाव-विवाद से सावधानी, यात्रा व्यथा, सम-सामयिक विकाश, शैक्षणिक असफलता जिससे मन खिन्न रहेगा, गृहस्थ जीवन सुखमय। उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन मिलाजुला प्रभाव देगा। विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क होने से कार्यों में सफलता।

**धनुष राशि -** शनि की ढैय्या के कारण मन में तनाव एवं अशान्ति, पारिवारिक उलझनें तथा बन्धुओं से मतभेद भी होते रहेंगे। राश्येश गुरु का परिवर्तन होने से कार्यों में सफलता प्राप्त होने की सम्भावना है। स्वास्थ्य सामान्य, कौटुम्बिक निर्वहन में बाधा, छात्रों के लिए समय उत्साह वर्धक, सहयोगियों से अनुकूलता। भूमि-वाहन सुख प्राप्त होंगे।

**मकर राशि -** साझेदारी के कामों में लाभ एवं वृद्धि, राजकीय सहयोग और मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य चिन्ता, तनाव-विवाद उच्च वर्गीय व्यक्तियों से सम्पर्क वृद्धि, कार्य क्षेत्र में श्रमानुकूल सफलता, रोजी रोजगार में प्रगति, विद्या बुद्धि का विकास। गुरु की नीच दृष्टि होने से जल्दबाजी और उत्तेजना एवं विचारों में उग्रता बढ़ेगी जिससे हानि होगी।

**कुंभ राशि -** साढ़ेसाती के साथ ही अष्टमस्थ सूर्य मंगल से प्रभावित होने के कारण आर्थिक परेशानियों के साथ तनाव-वाद-विवाद होते रहेंगे। स्वास्थ्य चिन्ता, कार्यों में शिथिलता, पारिवारिक चिन्ता रहेगी। इस मास धन लाभ सामान्य रहेगा, कार्यक्षेत्र में दौड़-धूप अधिक एवं खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा।

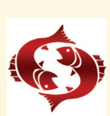

**मीन राशि -** पूर्व किए गए प्रयासों से भाग्योन्नति तथा श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क लाभकारी होगा। अनावश्यक भागदौड़ से परेशानी, सामाजिक कार्यों में प्रगति, अपौष्टिक भोज्य पदार्थ खाने से स्वास्थ्य बाधा। भूमि-वाहनादि सुख प्राप्त होंगे। क्रय-विक्रय के कार्यों से भी लाभ परन्तु नौकरी में उच्च लोगों से तनाव हो सकता है। उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन मिला-जुला प्रभाव देगा।

(नीतिकथा)

# कौन है बड़ा?

- श्री के.रामनाथन

ऋषभदेव नामक एक साधु ने देवी पार्वती को ध्यान में रखते हुये उनके दर्शन पाने के विचार से कठोर तपस्या की। वे अन्न-जल लिये बिना तपस्या में लीन रहे थे। परंतु उनका मन तपस्या में नहीं लगता था। कारण यह था कि उस साधु के मन में यह विचार इतना दृढ़ रहा था कि मैं गाँव के लोगों से श्रेष्ठ हूँ। लोग इच्छा से प्रेरित होकर धन के पीछे दौड़ रहे हैं। मैं ऐसा नहीं हूँ। ईश्वर की दया पाने उनकी ओर दौड़ रहा हूँ। इसलिये मैं उन लोगों से श्रेष्ठ हूँ। साधु के ऐसे विचार के कारण उनका मन तपस्या में नहीं लगता था। इससे वे परेशान थे। उन्होंने सोचा कि यह स्थान तपस्या करने योग्य नहीं है। इसलिये इस वन के अन्दर और आगे जायेंगे। वहाँ एक अच्छे स्थान को चुनकर अपनी तपस्या जारी करेंगे। यह सोचकर साधु वन के अन्दर आगे बढ़ने लगे।

अच्छे स्थान की खोज में चलते चलते वे थक गये थे। इतने में उनको बड़ी प्यास लगी। उन्होंने इधर-उधर तलाश किया तो निकट कोई जलाशय नहीं था। इसलिये वे उदास होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गये। तब उन्होंने देखा कि दूर एक औरत पानी का घड़ा लेकर आ रही है। इससे वे खुश हुये। साधु में उतना बल भी नहीं था कि उठकर उसके पास जल्दी जाकर पानी माँगे और अपनी प्यास बुझावें। इसलिये वे अपनी थकावट के कारण वहीं बैठकर उस स्त्री के निकट आने तक इंतजार करने लगे।

जब वह स्त्री साधु के निकट आई तो साधु ने उस स्त्री से अपनी प्यास बुझाने के लिये थोड़ा जल माँगा। यह सुनकर स्त्री ने साधु को देखकर कहा, ''ऋषिवर, मैं इस जल को बहुत दूर से ले आ रही हूँ। मेरे घर में बच्चे हैं। उनको खाना पकाने के लिये यह जल चाहिए। यहाँ से थोड़ी दूर पर ही एक तालाब है। आप वहाँ जाकर अपना आवश्यक जल पीकर प्यास बुझा सकते हैं।''

स्त्री का बात सुनकर साधु ने कहा, ''बेटी मैं थकावट के मारे इतना कमजोर हो गया हूँ कि आगे एक कदम भी रखना मुश्किल है।'' यह सुनकर वह स्त्री साधु को जल देने तैयार हो गई। तब तक उसने साधु को देखकर पूछा, ''ऋषिवर, मैं आपको जल देने तैयार हूँ। परंतु आपने अपने बारे में कुछ नहीं बताया है। आप कौन हैं? और कहाँ से आ रहे हैं?''

यह सुनकर साधु ने बड़े घमंड से सोचा कि इस साधारण अपढ़ स्त्री के लिये अपना बड़ा परिचय स्पष्ट रूप से क्यों दें? इसलिये उन्होंने यही कहा कि मैं एक यात्री हूँ।

उनका जवाब सुनकर उस स्त्री ने पूछा, ''महर्षि इस दुनिया में सिर्फ दो ही यात्री होते हैं और वे हैं चंद्र और सूर्य। वे दोनों ही रात और दिन के समय में लगातार और क्रम से आते-जाते हैं। इसलिये आप कैसे यात्री बन सकते हैं?''

स्त्री की बात सुनकर साधु ने कहा, ''बेटी मुझे एक मेहमान समझो।'' यह सुनकर उस स्त्री ने पूछा, ''ऋषिवर, इस संसार में दो ही मेहमान होते हैं और वे हैं हमारा युवापन और ऐश्वर्य। हमारे जीवन में युवापन कुछ समय तक रहकर छूट जाता है और वैसे ही ऐश्वर्य भी सदा स्थाई नहीं रहता। इसलिये आप कैसे मेहमान बन सकते हैं?''

यह सुनकर साधु ने कहा, ''अच्छा बेटी, मुझे सहनशील व्यक्ति समझो।''

साधु की बात से स्त्री ने सवाल उठाया, ''साधुवर, इस संसार में सहनशील दो ही हैं और वे है यह धरती और वह पेड़। यह धरती जितना भी दुःख दें हमारी रक्षा करती है और वह पेड़ पत्थर मारने पर भी मीठा फल देता है। इसलिये आप कैसे सहनशील बन सकते हैं?'' साधु की प्यास बढ़ती रही। लेकिन वह स्त्री उनके घमंड को दूर किये बिना पानी देने तैयार नहीं थी। इसलिये साधु ने कहा- ''बेटी मुझे जिद्दी समझ लो और मुझे जल देकर प्यास बुझाओ।''

यह सुनकर उस स्त्री ने कहा, ''अच्छा आप नहीं जानते कि इस दुनिया में सिर्फ दो ही जिद्दी हैं और वे हैं नाखून और बाल। इन दोनों को जितना भी काटो बढ़ते ही रहेंगे। इसलिये आप कैसे जिद्दी बन सकते है?'' यह सुनकर साधु बहुत उदास हो गये। उसने अपनी प्यास बुझाने के लिये इतना कहकर उसके पाँव पड़ने लगे कि बेटी मैं एक साधारण साधु हूँ। तुम थोड़ा जल देकर मेरी प्यास बुझाओ।

साधु के पाँव पड़ते देखकर उस स्त्री ने कहा, ''वत्स उठो। मैं तुम्हारे घमंड की भावना को दूर करने के लिये ही ऐसा किया था। अब तुम अपना वांछित वरदान माँगो।''

स्त्री की बात सुनकर साधु उठ खड़े हुये। उन्होंने वहाँ देखा कि देवी पार्वती खड़ी है और वह अपने दिव्य दर्शन दे रही है। इससे साधु प्रसन्न हुये। उन्होंने अपनी गलती के लिये क्षमा याचना की। देवी ने भी उनको वांछित वरदान देकर विलीन हो गयी। सच है, इस संसार में हम कितनी भी ऊँची स्थिति में रहें किसी को भी छोटा या नीच नहीं समझना चाहिये। क्योंकि हर जीव में ईश्वर निवास करते हैं। हर जीव का सम्मान ईश्वर का सम्मान है। जब हम इस सत्य को समझते हैं तब ईश्वर की सत्यता को स्पष्ट समझ सकते हैं।

**तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।**

## लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्योहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए 3 महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

**प्रधान संपादक,**
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

चित्रकथा

# गुरु का सम्मान करें


तेलुगु मूल - मोलका उत्तरफल्गुणि
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - डॉ.के.श्रीधरन्

12 एक दिन धर्मराज का भाई जंगल गया।
13 अरे! कौन हो तुम; मुझे क्यों बंधी बनाया? छोडो।
14 तभी अपने भाई को ढूँढते हुए धर्मराज वहाँ पहुँच गये।
15 मैं पहले नहुष नामक चक्रवर्ती था। अगस्त्य मुनि के शाप के कारण इस प्रकार जंगल में अजगर की भाँति घूमता हूँ। मेरे सवालों का जवाब देने से ही मैं तुम्हें छोड दूँगा।
16 हे सर्प! तुम्हारे सवालों का जवाब मैं दूँगा। मेरा भाई को छोड दो।
17 ओह! अब मैं पूछूँगा बोलो।
18 ब्राह्मण-कौन है?
19 सत्य, दान, दया, व्यक्तित्व, अहिंसा और इंद्रियनिग्रह जैसे गुण जिस में मौजूद है, वही ब्राह्मण है।
20 उसे मुख्य रूप से कौनसा विषय जानना है?
21 दुःख से परे परब्रह्म को जानना जरूरी है। ये गुण जिस में मौजूद है वह ब्राह्मण कहलाएगा।
22 धर्मराज! मेरे प्रश्नों का सही उत्तर तुमने दिया है। मेरा सर्प रूप अदृश्य होकर असली रूप आ गया है। अब में जाऊँगा। विजयोस्तु।
23 राजा! धन्योस्मि!!
24 नीति : गुरुओं को सम्मान करना ही सर्वोत्कृष्ट धर्म है। गुरुकृपा से ही मानव जन्म सफलीकृत बन जाता है।
K.Sreedharan

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

## प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

**प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-**
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम........................................
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता................................................
....................................................
मोबाइल नं.........................................

# क्विज-39

**1)** ब्रह्मोत्सव के अवसर पर स्वामिपुष्करिणी में संपन्न करनेवाला उत्सव क्या है?
ज)..................................................

**2)** श्रीविल्लीपुत्तूर गोदादेवी का पुष्पमाला को तिरुमल में किस वाहन सेवा में भगवान जी को समर्पित करते है?
ज)..................................................

**3)** कार्तिक शुक्ल चतुर्थी के दिन संपन्न करनेवाला पूजा क्या है?
ज)..................................................

**4)** ऋषभदेव नामक साधु ने किस देवी के अनुग्रह के लिए तपस्या की?
ज)..................................................

**5)** सत्यभामा ने किस राक्षस को संहार किया?
ज)..................................................

**6)** सत्यभामा का पति का नाम क्या है?
ज)..................................................

**7)** आंध्रप्रदेश कर्नूल जिले में उपस्थित प्रसिद्ध नंदि मंडल का नाम क्या है?
ज)..................................................

**8)** विजयदशमी के अवसर पर किस वृक्ष राज को आराध्य करना अवश्य है?
ज)..................................................

**9)** तिरुमल में ब्रह्मदेव के द्वारा कौन सा उत्सव मनाया जाता है?
ज)..................................................

**10)** ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन कौन-सा नक्षत्र होता है?
ज)..................................................

**11)** तिरुमल में किस आगम पद्धति को अनुसरण करते है?
ज)..................................................

**12)** नवनंदि मंडल में प्रथम नंदीश्वर शिव लिंग का दूसरा नाम क्या है?
ज)..................................................

**13)** ब्रह्मोत्सव में ध्वज आरोहण को क्या कहते है?
ज)..................................................

**14)** सागर मन्थन में उत्पन्न हलाहल को किसने स्वीकार किया?
ज)..................................................

**15)** किस युग में श्रीकृष्ण का अवतार धारण किया?
ज)..................................................

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

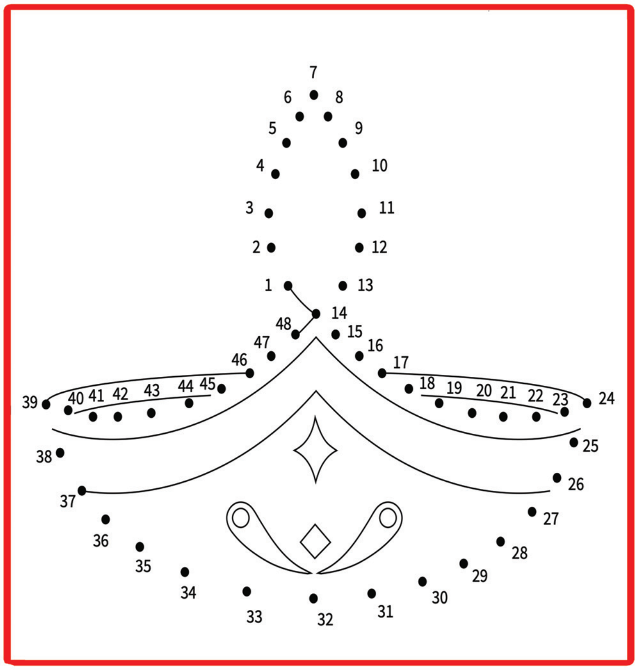

रंगों को भरिये क्या!

## तालिका में सूचित विषय के अनुसार चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

(d)

(e)

(f)

(g)

(h)

(i)

(j)

(k)

(l)

1) दिवाली के संबंधित चित्रों को चुनिए...
2) नागुल चविति के संबंधित चित्रों को चुनिए...
3) धन्वंतरी भगवान के संबंधित चित्रों को चुनिए...
4) नवरात्रि उत्सव के संबंधित चित्रों को चुनिए...

1) (d) नरकासुर (e) कृष्ण भगवान (h) सत्यभामा
2) (b) बिल (g) सांप (j) दूध
3) (a) धन्वंतरी भगवान (f) कलश (i) आयुर्वेद संबंधित पत्तें
4) (c) महिषासुरमर्दिनी देवी (k) राक्षस महिषासुर (l) त्रिशूल

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

# सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

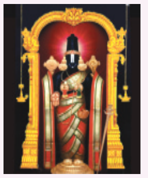

## चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ...........................................
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ...........................................
   ...........................................
   पिनकोड ..............................
   मोबाइल नं ............................
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

...................................................................

⌖ वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।

⌖ नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

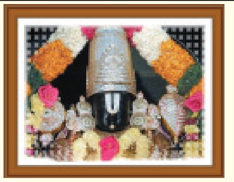

## धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

**STD Code: 0877**

दूरभाष : 2264359,
2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

**मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय**

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

79वाँ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दि.15-08-2025 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. का प्रशासनिक भवन के मैदान में अत्यंत वैभव से स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम को ति.ति.दे. ने आयोजित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष, ति.ति.दे. का भूतपूर्व ई.ओ. और ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ. के साथ अन्य उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया।

दि.16-08-2025 को ति.ति.दे. का न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी ने तमिलनाडु, चेन्नै में स्थित ति.ति.दे. का श्री वेंकटेश्वरस्वामी, श्री पद्मावती देवी का मंदिरों को संदर्शन करके भगवान जी को दर्शन किया।

दि.16-08-2025 को आडिकृत्तिका के पर्व दिन के अवसर पर तमिलनाडु, तिरुत्तणि में स्थित श्री सुब्रह्मण्यस्वामी जी को ति.ति.दे. की ओर से पवित्र रेशमी वस्त्रों को समर्पित करते हुए ति.ति.दे. का न्यास-मडंली के अध्यक्ष जी।

तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. एस.वी.गोशाला में गोकुलाष्टमी पर्व के संदर्भ में दि.16-08-2025 को गोपूजा महोत्सव को ति.ति.दे. ने अत्यंत वैभव से संपन्न किया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. का भूतपूर्व ई.ओ. ने शास्त्रोक्त रूप से गोपूजा महोत्सव को संपन्न किया।

दि.08-08-2025 को तिरुचानूर में स्थित श्री पद्मावती देवी का मंदिर में अत्यंत वैभव से श्री वरलक्ष्मी व्रत को संपन्न किया। इस संदर्भ में धर्मपत्नी सहित ति.ति.दे. का भूतपूर्व ई.ओ. और धर्मपत्नी सहित ति.ति.दे. का जे.ई.ओ. ने यह कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में अन्य ति.ति.दे. न्यास-मंडली के सदस्यगण व उच्च अधिकारीगण ने भाग लिया। इस संदर्भ में स्वर्णरथ में देवी माँ भक्तों को दर्शन दिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams Printing on 25-09-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

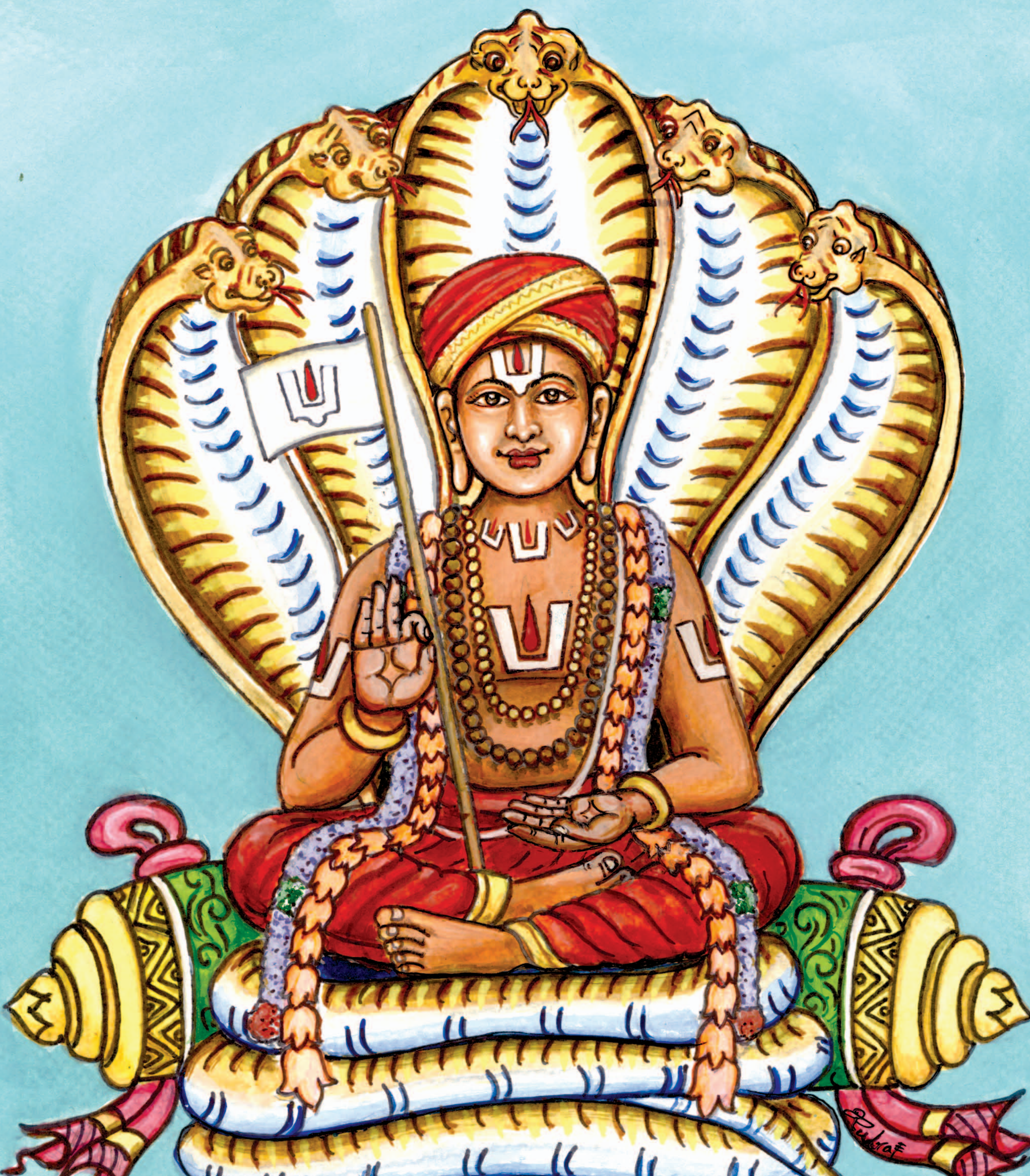

श्री मनवालमहामुनि शात्तुमोरा

27-10-2025